आर्थिक समीक्षा 2024-25 की मुख्य विशेषताएं

अहमदाबाद | बेंगलूरु | भोपाल | चंडीगढ़ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | राँची

आर्थिक समीक्षा 2024-25 की मुख्य विशेषताएं

विषय-सूची

आर्थिक समीक्षा या आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25 को जानें ______ 3
आर्थिक समीक्षा 2024-25: प्रस्तावना ______ 4
अध्याय 1: अर्थव्यवस्था की स्थिति पुनः तेज गति की ओर ______ 6
अध्याय 2: मौद्रिक और वित्तीय क्षेत्र विकासः अन्योन्याश्रयी संबंध ______ 9
अध्याय 3: बाह्य क्षेत्रक: FDI को व्यवस्थित रूप देना ______ 15
अध्याय 4: कीमतें और मुद्रास्फीतिः उतार-चढ़ाव को समझना ______ 19
अध्याय 5: मध्यम अवधि का परिदृश्यः गैर-विनियमन से विकास को बढ़ावा ______ 21
अध्याय 6: निवेश और अवसंरचनाः अनवरत रहे ______ 24
अध्याय 7: उद्योग: समग्र व्यावसायिक सुधार ______ 27
अध्याय 8- सेवा: दिग्गजों के समक्ष नई चुनौतियां ______ 30
अध्याय 9: कृषि और खाद्य प्रबंधन: भविष्य का क्षेत्र ______ 33
अध्याय 10: जलवायु और पर्यावरण: अनुकूलन की अनिवार्यता ______ 37
अध्याय 11: सामाजिक क्षेत्र: पहुंच का विस्तार करना और सशक्तीकरण को प्रोत्साहन ______ 41
अध्याय 12: रोजगार और कौशल विकास: अस्तित्वगत प्राथमिकताएं ______ 44
अध्याय 13: कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: AI) युग में श्रम व्यवस्था: संकट या उत्प्रेरक? ______ 47

अभ्यर्थियों के लिए संदेश

आर्थिक समीक्षा डॉक्यूमेंट UPSC सिविल सेवा परीक्षा के लिए सबसे महत्वपूर्ण अध्ययन सामग्रियों में से एक है। इसमें अर्थव्यवस्था के साथ-साथ **समाज, प्रौद्योगिकी, गवर्नेंस** आदि क्षेत्रों के महत्वपूर्ण पहलू भी शामिल हैं।

इसलिए, इस सारांश डॉक्यूमेंट का उद्देश्य **आर्थिक समीक्षा** के सभी अध्यायों का एक संक्षिप्त और सरल विवरण प्रस्तुत करना है। इस प्रयास को और भी बेहतर बनाने के लिए, इस वर्ष के संस्करण में दो नए सेक्शन शामिल किए गए हैं:

एक-पंक्ति में सारांश:
इसमें प्रत्येक अध्याय के सार का वर्णन एक-पंक्ति में किया गया है, जो मुख्य परीक्षा में उत्तरों को बेहतर बनाने में सहायक हो सकते हैं।

UPSC के लिए प्रासंगिकता:
इसके तहत, UPSC सिलेबस के अनुसार प्रत्येक अध्याय की प्रासंगिकता को दर्शाया गया है, जिससे आपको विभिन्न अध्यायों की उपयोगिता के बारे में एक समग्र दृष्टिकोण प्राप्त होगा।

CSAT
क्रैश कोर्स प्रीलिम्स 2025
VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION
(इसका उद्देश्य मूलभूत अवधारणाओं को रिवाइज करना और उन्हें सुदृढ़ करना, समस्या–समाधान क्षमताओं को बढ़ाना, विश्लेषणात्मक कौशल को बेहतर बनाना, समालोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना और प्रारंभिक परीक्षा 2025 के लिए समझ कौशल में सुधार करना है।)
प्रारंभ
English Medium 21 January, 1 PM
हिन्दी माध्यम 30 January, 1 PM
(Offline/Online)

आर्थिक समीक्षा या आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25 को जानें

आर्थिक सर्वेक्षण को समझें

आर्थिक सर्वेक्षण क्या है?

यह **भारत के विकास पथ का व्यापक विश्लेषण** प्रस्तुत करता है। इसमें हमारे राष्ट्र के प्रति वैश्विक आशावाद को दर्शाया गया है। इसके अतिरिक्त, इसमें अवसंरचना पर ध्यान देने के साथ ही कृषि एवं उद्योग जैसे क्षेत्रकों में विकास और भविष्योन्मुखी क्षेत्रकों पर भी बल दिया गया है

इसे कौन तैयार करता है?

- **वित्त मंत्रालय** के **आर्थिक कार्य विभाग (DEA)** के आर्थिक प्रभाग (Economic Division) द्वारा,
- यह **मुख्य आर्थिक सलाहकार (CEA) के मार्गदर्शन में** तैयार किया जाता है।

आर्थिक सर्वेक्षण बजट से कैसे संबंधित है?

प्रस्तुति और तैयारी

- यह **बजट प्रस्तुत किए जाने के एक दिन पहले** जारी किया जाता है।
- यह देश में वार्षिक आर्थिक विकास का सारांश प्रस्तुत करता है और अर्थव्यवस्था की लघु एवं मध्यम अवधि की संभावनाओं को रेखांकित करता है।
- आगामी वर्ष के बजट से पहले इसे संसद में पेश किया जाता है।

बजट के लिए नीतिगत परिप्रेक्ष्य

- **वित्त मंत्रालय के एक प्रमुख दस्तावेज** के रूप में, आर्थिक सर्वेक्षण **अर्थव्यवस्था के सभी पहलुओं को शामिल करते हुए विस्तृत सांख्यिकीय डेटा** प्रदान करता है।
- यह भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए आधिकारिक मार्गदर्शिका है और आम तौर पर यह केंद्रीय बजट के लिए नीतिगत परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है।

आर्थिक परिदृश्य

- आर्थिक सर्वेक्षण देश की आर्थिक प्रवृत्तियों को उजागर करता है। ये प्रवृत्तियां संसाधनों को जुटाने के प्रयासों और बजट में उनके आवंटन में वृद्धि को प्रेरित करती हैं।
- यह सर्वेक्षण **कृषि और औद्योगिक उत्पादन, बुनियादी ढांचे, रोजगार, वित्त की आपूर्ति, व्यापार, विदेशी मुद्रा भंडार और अन्य प्रासंगिक आर्थिक कारकों के रुझानों का विश्लेषण** करता है। ये सभी कारक बजट को प्रभावित करते हैं।

© Vision IAS

आर्थिक समीक्षा 2024-25: प्रस्तावना (Economic Survey 2024-25: Preface)

* मुख्य आर्थिक सलाहकार वी. अनंत नागेश्वरन द्वारा तैयार किए गए *आर्थिक समीक्षा 2024-25* में **गैर-विनियमन (Deregulation)** को घरेलू आर्थिक संवृद्धि और आर्थिक स्थिरता के लिए एक प्रमुख कारक के रूप में दर्शाया गया है।
* **गैर-विनियमन** को व्यवसाय करने की लागत को कम करने, नवाचार को बढ़ावा देने और रोजगार के अवसर सृजित करने के एक साधन के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

वैश्विक राजनीतिक और आर्थिक परिदृश्य

* **2024 के प्रमुख चुनाव परिणाम:** भारत की मौजूदा सरकार तीसरी बार पुनर्निर्वाचित हुई, जिससे राजनीतिक स्थिरता को बढ़ावा मिला है।
    * **संयुक्त राज्य अमेरिका** में राष्ट्रपति पद के लिए हुए चुनावों में सत्ता परिवर्तन हुआ, जबकि **इंडोनेशिया** में सत्तारूढ़ दल नए नेतृत्व के साथ सत्ता में बना रहा।
* **यूरोप में अनिश्चितताएं:** जर्मनी दो वर्षों से लगातार आर्थिक संकुचन का सामना कर रहा है, और आगामी चुनाव के बाद शायद राजनीतिक अस्थिरता बढ़ सकती है।
    * **फ्रांस** में आकस्मिक चुनावों के कारण अस्थिरता बनी रही, जबकि यू.के. में राजकोषीय दबावों के बीच लेबर पार्टी सत्ता में आ गई।
    * यूरोप उच्च ऊर्जा लागत और अक्षय ऊर्जा को अपनाने से उत्पन्न प्रतिस्पर्धात्मकता के दबाव का सामना कर रहा है।
* **चीन में आर्थिक गिरावट या मंदी:** कोविड-19 महामारी के बाद की आर्थिक पुनर्बहाली उम्मीद के मुताबिक नहीं रही, ओवरकैपेसिटी और रियल एस्टेट संकट ने मंदी का दबाव बढ़ाया है।
    * चीन के निर्यात में वृद्धि हुई है, जिससे 2024 में व्यापार अधिशेष 1 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर के करीब पहुंच गया है।

भारत के लिए चुनौतियां और अवसर

* **वैश्विक आर्थिक गिरावट या मंदी का प्रभाव:** वैश्विक स्तर पर ग्लोबलाइजेशन में गिरावट होने से भारत के निर्यात आधारित उद्योगों पर बुरा असर पड़ा है।
    * घरेलू आर्थिक संवृद्धि को बढ़ावा देने के लिए निवेश और उदारीकरण जैसे उपायों की आवश्यकता है।
* **जनसांख्यिकीय लाभ और जिम्मेदारी:** यूरोप में वृद्धजनों की बढ़ती आबादी के विपरीत, युवाओं की एक बड़ी आबादी भारत के लिए अवसर प्रदान करती है। हालांकि, इस अवसर का लाभ उठाने के लिए भारत को रोजगार सृजन और कौशल विकास में निवेश करने की जरूरत है।
* **महत्वपूर्ण क्षेत्रकों पर निर्भरता:** भारत में सौर ऊर्जा जैसे क्षेत्रकों से जुड़े आवश्यक घटकों के उत्पादन की क्षमता सीमित है। इस कारण चीन की आपूर्ति श्रृंखला पर भारत की निर्भरता बढ़ जाती है।
    * इसके लिए घरेलू विनिर्माण क्षमताओं को बेहतर बनाने और आयातों में विविधता लाने की आवश्यकता है।

रणनीतिक आर्थिक फोकस क्षेत्र

* **निवेश और आपूर्ति श्रृंखला में लचीलापन:** भारत की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता में वृद्धि करने और नवाचार-क्षमता बढ़ाने के लिए घरेलू एवं विदेशी निवेश आकर्षित करना आवश्यक है।
    * इसके लिए आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करते हुए अल्पकालिक लागत कारकों से आगे सोचने की जरूरत है।
* **जलवायु परिवर्तन और एनर्जी ट्रांजिशन:** ऊर्जा सुरक्षा और वहनीयता को सतत विकास नीतियों के साथ संतुलित करने की आवश्यकता है।
    * इलेक्ट्रिक मोबिलिटी आर्थिक लाभ प्रदान कर सकती है, लेकिन आयात पर अत्यधिक निर्भरता इसमें एक प्रमुख चुनौती है।
    * निजी इलेक्ट्रिक वाहनों की तुलना में सार्वजनिक परिवहन को अपनाना अधिक कुशल विकल्प माना जा रहा है।
* **कृषि और ग्रामीण विकास:** इसके लिए फसल विविधीकरण को बढ़ावा देना और जल-गहन फसलों पर निर्भरता को कम करना आवश्यक है।
    * सिंचाई कवरेज में सुधार और कृषि अनुसंधान में निवेश करना चाहिए ताकि उत्पादकता में वृद्धि की जा सके।

गैर-विनियमन: आर्थिक संवृद्धि के लिए उत्प्रेरक

* **व्यवसाय की लागत में कमी करना:** व्यवसाय की लागत को कम करने और उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए गैर-विनियमन को एक अनिवार्य घटक माना गया है।
* **अनुपालन संबंधी अनिवार्यताओं को सरल बनाना:** इसके लिए सूक्ष्म प्रबंधन से हटकर जोखिम-आधारित विनियमों को अपनाने की सिफारिश की गई है, जिससे व्यवसायों पर विनियामकीय नियमों के पालन का बोझ कम होगा।

© Vision IAS

- ○ विनियामकीय दृष्टिकोण में "निर्दोष साबित होने तक दोषी मानने" के बजाय "जब तक दोषी साबित न हो जाए निर्दोष मानने" के सिद्धांत को अपनाने की आवश्यकता है।
- **नवाचार को बढ़ावा देना:** सरकारी हस्तक्षेप को कम किया जाना चाहिए ताकि व्यवसायों को उनके मुख्य कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने का अवसर मिल सके।
  - ○ नवाचार और आर्थिक संवृद्धि को बढ़ावा देने के लिए, राज्य और निजी क्षेत्रक के मध्य आपसी विश्वास बढ़ाने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष: भारत के लिए आगे की राह

- *आर्थिक समीक्षा 2024-25* में भारत की आर्थिक संवृद्धि को बढ़ावा देने के लिए एक रोडमैप प्रस्तुत किया गया है। इसमें गैर-विनियमन, महत्वपूर्ण क्षेत्रों में निवेश और संतुलित एनर्जी ट्रांजिशन पर जोर दिया गया है।
- सरकार की मुख्य भूमिका आर्थिक संवृद्धि को सक्षम बनाने वाला परिवेश निर्मित करना है, जबकि व्यवसायों से नवाचार और उत्पादकता बढ़ाने की अपेक्षा की जाती है।
- भविष्य की आर्थिक समीक्षा डॉक्यूमेंट में सुधार के लिए निरंतर फीडबैक आमंत्रित किए गए हैं, ताकि इसे शैक्षणिक अध्ययन सामग्री और व्यावहारिक नीति निर्माण मार्गदर्शिका के रूप में विकसित किया जा सके।

अध्याय 1: अर्थव्यवस्था की स्थिति पुनः तेज गति की ओर (State of the Economy: Getting Back into the Fast Lane)

परिचय

- **वर्ष 2023 में** वैश्विक अर्थव्यवस्था में **3.3 प्रतिशत** की आर्थिक संवृद्धि दर्ज की गई। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) ने **अगले पांच वर्षों** में 3.2 प्रतिशत की वैश्विक संवृद्धि दर का अनुमान लगाया है।
- आपूर्ति श्रृंखला के बाधित होने और विदेशों में कम मांग के कारण विशेष रूप से यूरोप और कुछ एशियाई देशों में **वैश्विक विनिर्माण में धीमी वृद्धि दर्ज की गई।**
- सेवा क्षेत्रक ने तुलनात्मक तौर पर बेहतरीन प्रदर्शन किया जिससे कई देशों की अर्थव्यवस्था को गति मिली।

वैश्विक आर्थिक परिदृश्य

- **मुद्रास्फीति संबंधी दबाव:** विश्व की अर्थव्यवस्थाओं में मुद्रास्फीति की दर लगातार कम हो रही है, जो केंद्रीय बैंकों के लक्षित स्तरों के करीब पहुंच रही है।
  - ऐसा प्रतीत होता है कि सेवा क्षेत्रक में मुद्रास्फीति के उच्च बने रहने के कारण अवस्फीति (Disinflation) धीमी हो गई, जबकि मुख्य (कोर) वस्तुओं की मुद्रास्फीति कम होकर नगण्य स्तर तक पहुंच गई।
- **वैश्विक अनिश्चितता:**
  - मध्य पूर्व में तनाव ने महत्वपूर्ण शिपिंग मार्गों में से एक - स्वेज नहर (वैश्विक समुद्री व्यापार के 15% के लिए जिम्मेदार) के माध्यम से व्यापार को बाधित कर दिया।
  - वैश्विक आर्थिक नीतियों को लेकर चिंताओं के कारण **भू-राजनीतिक आर्थिक नीति अनिश्चितता सूचकांक**[1] 121.7 (2023) से बढ़कर **133.6 (2024)** हो गया।
  - व्यापारिक तनाव और प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में नीतिगत बदलावों के कारण **विश्व व्यापार अनिश्चितता सूचकांक**[2] 8.5 (2023) से बढ़कर **13 (2024)** हो गया।

चार्ट I.1: वर्ष 2024 में समुत्थानशील वैश्विक विकास के रुझान

स्रोत: ओईसीडी आर्थिक आउटलुक, खंड 2024 अंक 2.

चार्ट I.2: कंट्री ग्रुप्स में स्थिर विकास की संभावना

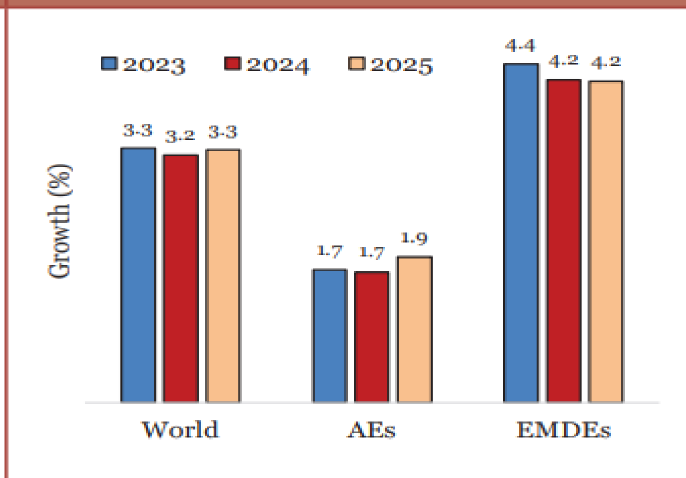

स्रोत: आईएमएफ डब्ल्यूईओ (जनवरी 2025)

नोट: एईएस- उन्नत अर्थव्यवस्थाएं, ईएमडीई- उभरते बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाएं।

[1] Geopolitical Economic Policy Uncertainty index

[2] World Trade Uncertainty Index

भारतीय अर्थव्यवस्था

- **संवृद्धि:** राष्ट्रीय आय पर पहले अग्रिम अनुमानों के अनुसार **वित्त वर्ष 25 के लिए वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद (रियल जीडीपी) की संवृद्धि 6.4 प्रतिशत** रहने का अनुमान है; जो इसके दशकीय औसत के लगभग बराबर है।
- **मांग पक्ष:** स्थिर मूल्यों पर निजी अंतिम उपभोग व्यय 7.3 प्रतिशत बढ़ने का अनुमान है, जो **ग्रामीण मांग** के बढ़ने से हुआ है।
- **आपूर्ति पक्ष:** वास्तविक सकल मूल्य वर्धन (GVA) के भी **6.4 प्रतिशत की दर से वृद्धि** का अनुमान है।
- **क्षेत्रकवार प्रदर्शन:**
    - **कृषि क्षेत्रक में** वित्त वर्ष 25 में **3.8 प्रतिशत** की संवृद्धि अनुमानित है।
    - **औद्योगिक क्षेत्र में** वित्त वर्ष 25 में **6.2 प्रतिशत** की वृद्धि का अनुमान है।
        - निर्माण गतिविधियों तथा बिजली, गैस, जल की आपूर्ति और अन्य उपयोगिता सेवाओं में **मजबूत संवृद्धि दर** से **औद्योगिक विस्तार** का समर्थन करने की संभावना है।
    - वित्तीय, रियल एस्टेट, पेशेवर सेवाओं, लोक प्रशासन, रक्षा और अन्य सेवाओं में सकारात्मक गतिविधियों की वजह से **सेवा क्षेत्रक में** 7.2 प्रतिशत की मजबूत वृद्धि प्राप्त होने की संभावना है।

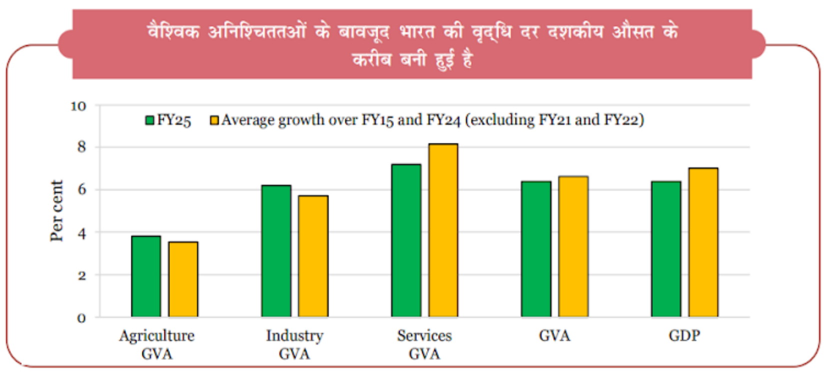

स्रोत: एमओएसपीआई, नोट: जीवीए: सकल मूल्य वर्धन: जीडीपी: सकल घरेलू उत्पाद

- विभिन्न चुनौतियों के बावजूद, भारत विनिर्माण **'क्रय प्रबंधक सूचकांक (PMI)[3]' में तेज वृद्धि दर्ज करता रहा है।**
- वित्त वर्ष 25 की पहली छमाही के दौरान **सेवा क्षेत्रक PMI में विस्तार (वृद्धि)** देखा गया। इसकी वजहें थीं- नये व्यवसाय (आर्डर) मिलना, मांग में तेज वृद्धि और रोजगार सृजन में तेजी।
- **मुद्रास्फीति:** रिटेल हेडलाइन मुद्रास्फीति वित्त वर्ष 24 की 5.4 प्रतिशत से घटकर अप्रैल-दिसंबर 2024 में 4.9 प्रतिशत हो गई। रिटेल हेडलाइन मुद्रास्फीति वास्तव में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) में बदलाव का मापन है।
- **पूंजीगत व्यय (कैपेक्स)** में **वित्त वर्ष 2021 से 2024 तक लगातार सुधार** हुआ है।
    - आम चुनाव के बाद, **कैपेक्स (CAPEX)** में जुलाई से नवंबर 2024 के दौरान पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 8.2 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई।
- **बाह्य क्षेत्रक:**
    - वैश्विक सेवा निर्यात में भारत की **सातवीं सबसे बड़ी** हिस्सेदारी है, जो इस क्षेत्रक में भारत की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को रेखांकित करता है।
    - **अप्रैल से दिसंबर 2024 के दौरान,** गैर-पेट्रोलियम तथा गैर-रत्न व आभूषण निर्यात में **9.1%** की वृद्धि दर्ज हुई, जो अस्थिर वैश्विक परिस्थितियों के बीच भारत के व्यापारिक निर्यात की मजबूती को दर्शाता है।
- **रोजगार संबंधी रुझान:**
    - **वर्ष 2023-24** के वार्षिक आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) रिपोर्ट के अनुसार, 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के व्यक्तियों के लिए बेरोजगारी दर 2017-18 में **6 प्रतिशत** से लगातार कम होकर 2023-24 में **3.2 प्रतिशत** हो गई।
    - भारत में औपचारिक क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। **कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO)** के निवल सब्सक्रिप्शन वित्त वर्ष 19 के 61 लाख से बढ़कर वित्त वर्ष 24 में **131 लाख** हो गए।

[3] Purchasing Managers' Index

परिदृश्य और आगे की राह

- विकास के उतार-चढ़ाव को ध्यान में रखते हुए, आर्थिक समीक्षा में वित्त वर्ष 2026 में वास्तविक जीडीपी संवृद्धि 6.3 और 6.8% के बीच रहने का अनुमान है।
- अर्थव्यवस्था की **समग्र** प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार लाने तथा आर्थिक गतिविधि के उच्च स्तर को बनाए रखते हुए मध्यम अवधि में संवृद्धि दर को बढ़ाने के लिए **जमीनी स्तर पर गैर-विनियमन को बढ़ावा देने एवं आधारभूत स्तर** पर सुधार करने की आवश्यकता है।

एक-पंक्ति में सारांश

मजबूत घरेलू मांग, बुनियादी ढांचे में निवेश और समष्टि आर्थिक स्थिरता के कारण भारत की आर्थिक संवृद्धि मजबूत बनी हुई है, लेकिन मुद्रास्फीति और वैश्विक आर्थिक गिरावट या मंदी जैसे बाहरी जोखिमों के लिए सतर्क नीतिगत प्रबंधन की आवश्यकता है।

UPSC के लिए प्रासंगिकता

- *आर्थिक विकास और स्थिरता (GS-3: भारतीय अर्थव्यवस्था, संवृद्धि संबंधी ट्रेंड्स और नीतियां)*
- *मुद्रास्फीति नियंत्रण और राजकोषीय नीति (GS-3: अर्थव्यवस्था, मौद्रिक और राजकोषीय नीतियां)*
- *निवेश एवं बुनियादी ढांचा विकास (GS-3: आर्थिक विकास, उद्योग)*
- *वैश्विक आर्थिक रुझान और भारत पर प्रभाव (GS-2: अंतर्राष्ट्रीय संबंध, GS-3: बाह्य क्षेत्रक)*

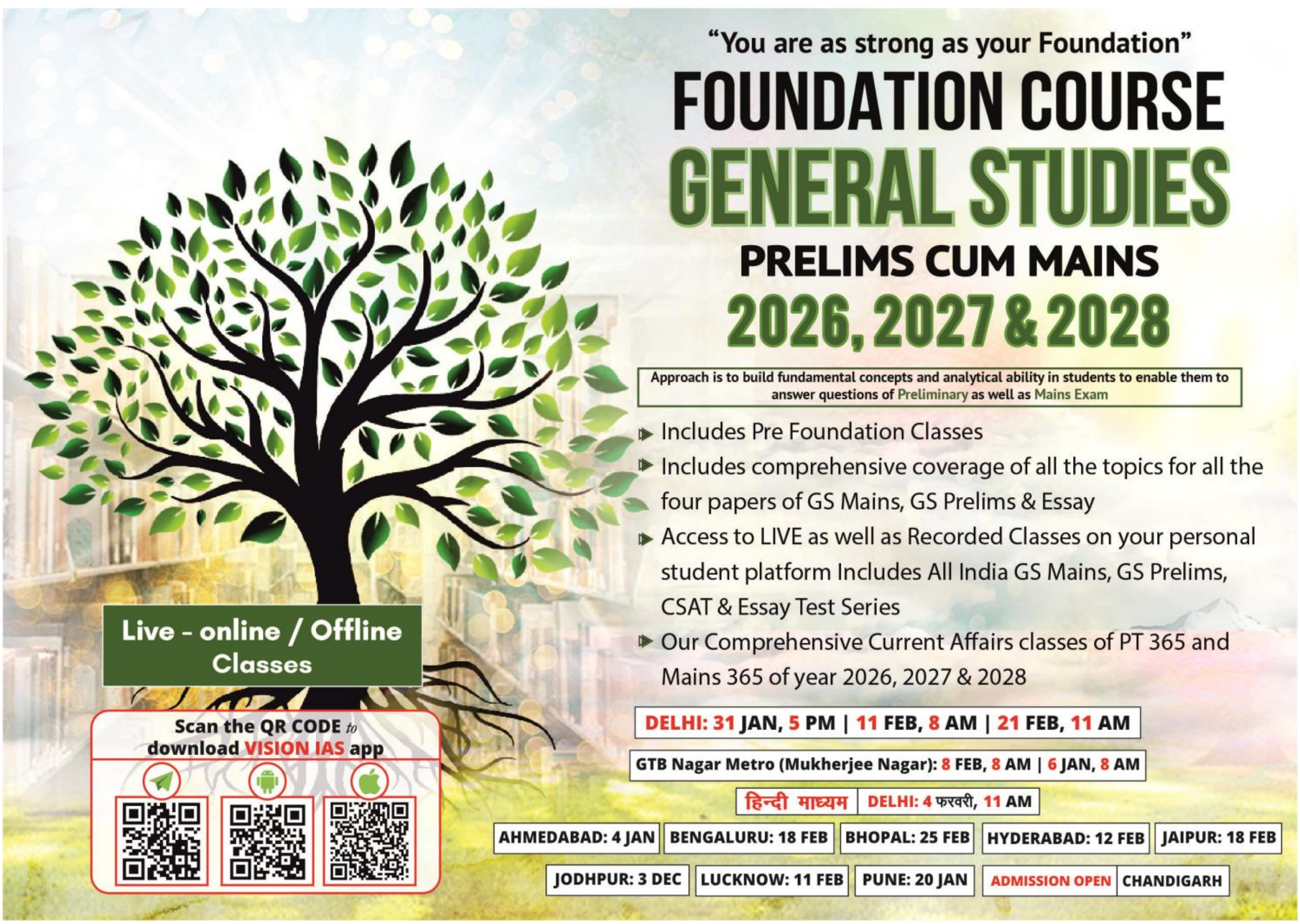

अध्याय 2: मौद्रिक और वित्तीय क्षेत्र विकास: अन्योन्याश्रयी संबंध (Monetary and Financial Sector Developments: The Cart and the Horse)

परिचय

- **चालू वित्त वर्ष में बैंक ऋण स्थिर दर से बढ़ा है,** जिससे बैंक ऋण में वृद्धि और बैंक जमा में वृद्धि लगभग समान स्तर पर पहुंच रही है।
- अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (SCBs) की लाभप्रदता में निरंतर सुधार हुआ है, जैसा कि सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों (GNPA) में गिरावट से परिलक्षित होता है।
- इसके साथ **पूंजी-से-जोखिम भारित परिसंपत्ति अनुपात (CRAR)[4] में वृद्धि** दर्ज हुई है।

बैंकिंग क्षेत्रक का प्रदर्शन और ऋण उपलब्धता

- **ऋण वृद्धि: लगातार दो वर्षों तक** ऋण वृद्धि नॉमिनल जीडीपी संवृद्धि से आगे रही।
    - ऋण-जीडीपी अंतर वित्त वर्ष 23 की पहली तिमाही में (-) 10.3 प्रतिशत से घटकर वित्त वर्ष 25 की पहली तिमाही में (-) 0.3 प्रतिशत रह गया।
- **परिसंपत्ति गुणवत्ता में सुधार: अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (SCBs)** का सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (GNPA) अनुपात वित्त वर्ष 2018 में अपने उच्चतम स्तर से लगातार घटते हुए सितंबर 2024 के अंत में **2.6%** तक आ गया।

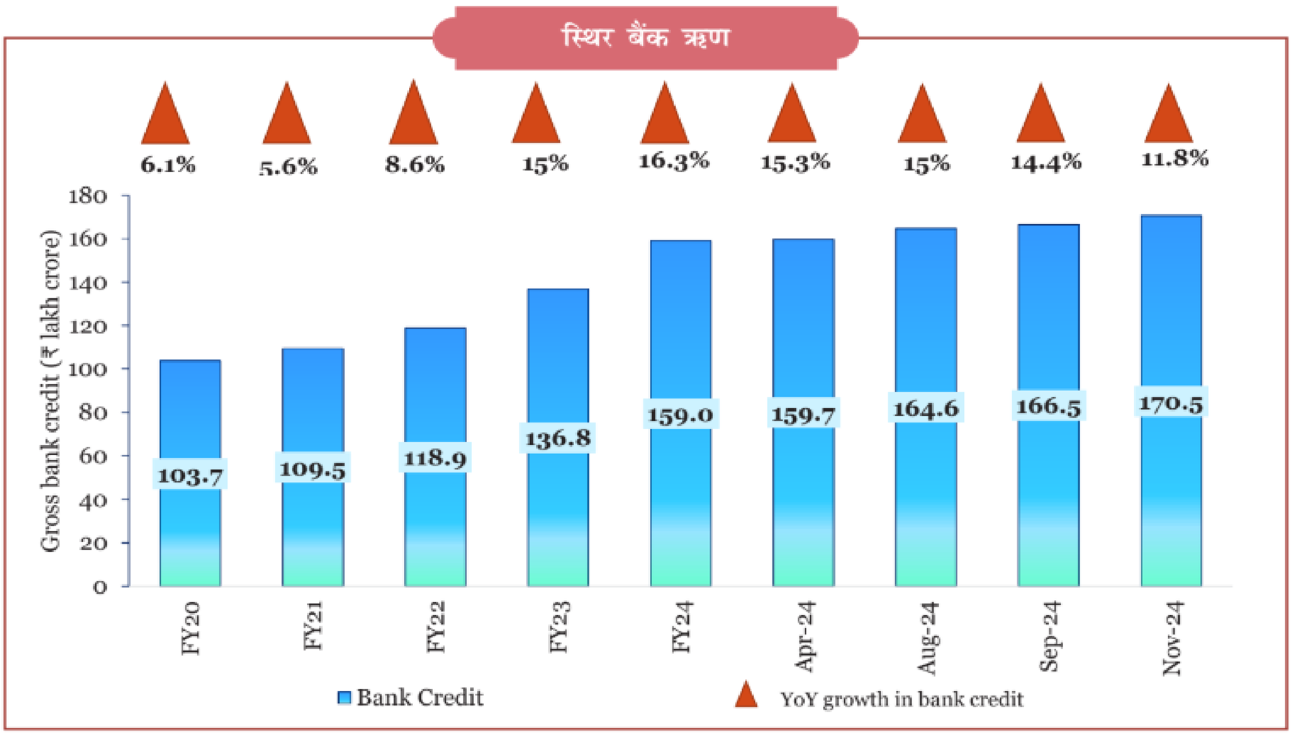

- सितंबर 2024 के अंत तक, **अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (SCBs) का पूंजी से जोखिम-भारित संपत्ति अनुपात (CRAR) 16.7% था,** और सभी बैंकों ने 8% की कॉमन इक्विटी टियर-1 (CET-1) आवश्यकता को पूरा किया।
- **वैश्विक तुलना: प्राइवेट गैर-वित्तीय क्षेत्रक में भारत का बैंक ऋण-जीडीपी** अनुपात संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन और जापान जैसी **उन्नत अर्थव्यवस्थाओं (AEs)** की तुलना में कम है।
    - उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं (**EMEs**) की तुलना में यह अनुपात भी कम है। फिर भी, यह **इंडोनेशिया और मैक्सिको** से अधिक है।

[4] Capital-to-risk weighted asset ratio

- **ग्रामीण वित्तीय संस्थान:** क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की शाखाओं की संख्या **2006 की 14,494 से बढ़कर 2023 में 21,856 हो गई।**
- **वित्तीय समावेशन:** RBI का 'वित्तीय समावेशन सूचकांक' **मार्च 2021 के 53.9 से सुधरकर मार्च 2024 में 64.2** हो गया।

पूंजीगत बाजारों में विकास

- **अप्रैल से दिसंबर 2024** तक प्राथमिक बाजारों (इक्विटी और ऋण) से **कुल 11.1 लाख करोड़ रुपये के बराबर की** राशि के संसाधन जुटाए गए, जो पूरे **वित्त वर्ष 2024** के दौरान जुटाई गई राशि से 5 प्रतिशत अधिक है।
- विगत वर्ष की समान अवधि की तुलना में दिसंबर 2024 के अंत में **डीमैट खातों की संख्या 33% बढ़कर** 18.5 करोड़ हो गई।
- अप्रैल से दिसंबर 2024 के दौरान आईपीओ की संख्या पिछले वर्ष की समान अवधि के **196 से 32.1 प्रतिशत बढ़कर 259 हो गई।**
- दिसंबर 2024 के अंत में **BSE शेयर बाजार पूंजीकरण-जीडीपी अनुपात** 136% था।
    - यह **चीन (65%) और ब्राजील (37%)** जैसी अन्य उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं से कहीं अधिक है।

बीमा क्षेत्रक में विकास

- **FY24 में कुल बीमा प्रीमियम 7.7% बढ़कर** 11.2 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गई।
- **बीमा पैठ (Insurance penetration) में मामूली गिरावट दर्ज की गई है,** जो वित्त वर्ष 2023 की 4 प्रतिशत से घटकर **वित्त वर्ष 2024 में 3.7 प्रतिशत** रह गई।
- **जीवन बीमा पैठ** वित्त वर्ष 2023 के **3 प्रतिशत से मामूली रूप से घटकर वित्त वर्ष 2024 में 2.8 प्रतिशत** रह गई।
- **जीवन-भिन्न बीमा (नॉन-लाइफ इंश्योरेंस) पैठ** 1 प्रतिशत पर स्थिर रही।

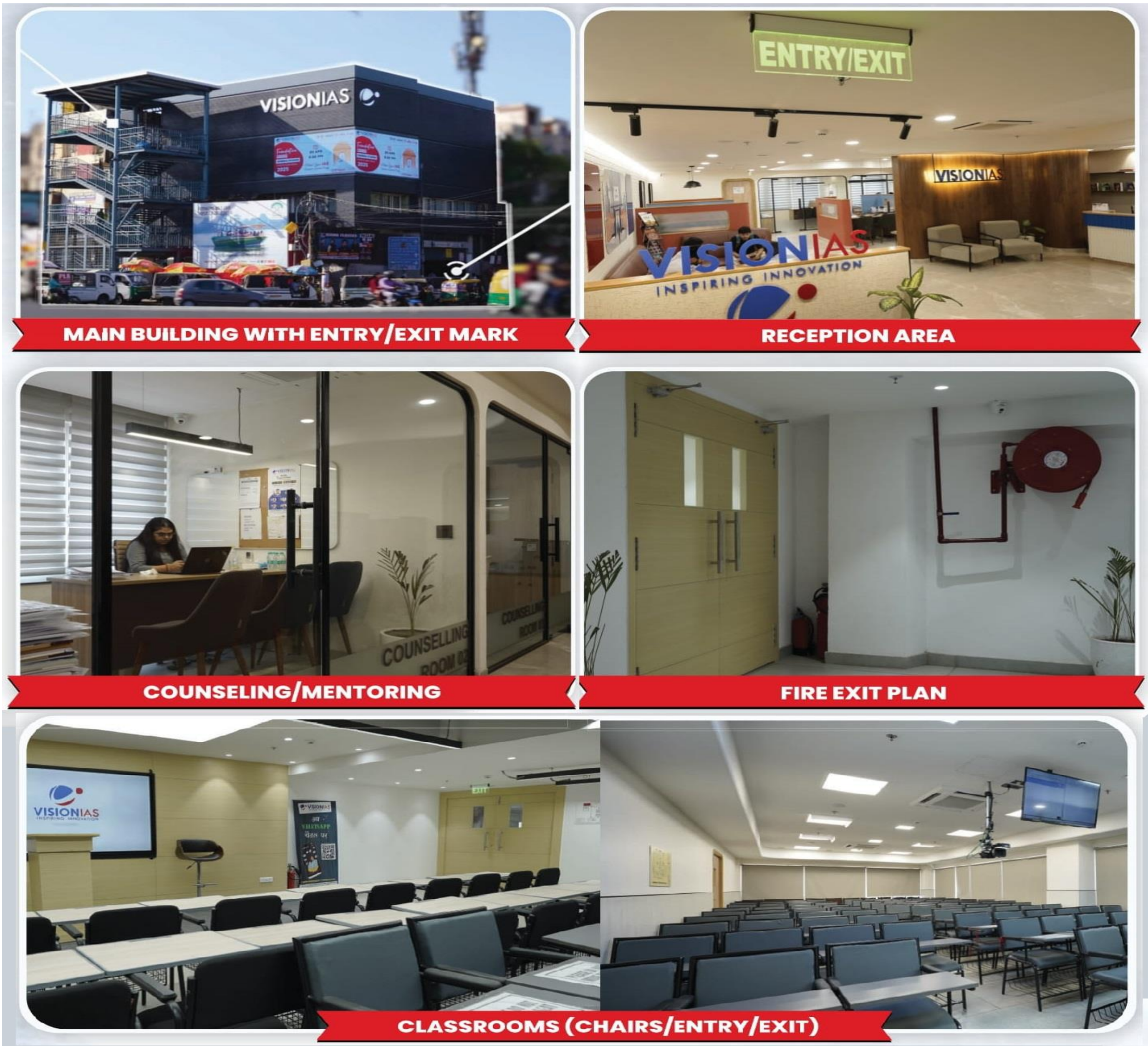

क्लासरूम प्रोग्राम : Vision IAS तैयारी के विभिन्न चरणों में सहायता और मार्गदर्शन के लिए अभ्यर्थियों को विभिन्न सेवाएं प्रदान करता है :

- सामान्य अध्ययन फाउंडेशन कोर्स (प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा): लगभग 12–14 महीने में सम्पूर्ण सिलेबस कवरेज
- CSAT क्लासेज
- करेंट अफेयर्स क्लासेज– मासिक करेंट अफेयर्स रिवीजन, PT365, Mains365
- निबंध लेखन
- एथिक्स (Ethics)– एथिक्स क्रैश कोर्स, एथिक्स केस स्टडीज
- GS मेंस एडवांस कोर्स

© Vision IAS

पेंशन क्षेत्रक में विकास

- समीक्षा के अनुसार राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (NPS) और अटल पेंशन योजना की शुरुआत के बाद से भारत के पेंशन क्षेत्रक में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज हुई है। सितंबर 2024 तक, इनके कुल सब्सक्राइबर्स की संख्या 783.4 लाख तक पहुंच गई। यह सितंबर 2023 की **675.2 लाख से 16 प्रतिशत** की वार्षिक वृद्धि दर्शाती है।
- मर्सर CFA इंस्टीट्यूट **ग्लोबल पेंशन इंडेक्स, 2024** के अनुसार, भारत का समग्र सूचकांक मूल्य **2023 में 45.9 से घटकर 2024 में 44 हो गया।**

ऑल इंडिया टेस्ट सीरीज (All India Test Series) : इस परीक्षा में अपने प्रदर्शन को बेहतर करने हेतु हर तीन में से दो चयनित अभ्यर्थियों द्वारा इसे चुना जाता रहा है। **VisionIAS** पोस्ट टेस्ट एनालिसिस ठोस सुधारात्मक उपाय उपलब्ध कराता है एवं प्रदर्शन में निरंतर सुधार सुनिश्चित करता है। उत्तर लेखन में सुधार एवं मार्गदर्शन के लिए **Vision IAS** के **Innovative Assessment System™** द्वारा अभ्यर्थी को फीडबैक दिया जाता है।

- ऑल इंडिया सामान्य अध्ययन (**GS Mains**) टेस्ट सीरीज एवं मेंटरिंग प्रोग्राम
- ऑल इंडिया **GS** प्रीलिम्स टेस्ट सीरीज एवं मेंटरिंग प्रोग्राम
- **CSAT** टेस्ट सीरीज
- वैकल्पिक विषय टेस्ट सीरीज– दर्शनशास्त्र, भूगोल, राजनीति विज्ञान एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंध, समाजशास्त्र
- संधान टेस्ट सीरीज
- ओपन टेस्ट (**Open Test**)
- **Abhyaas– Abhyaas Prelims & Mains**

मेंटरिंग कार्यक्रम – **UPSC** सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी के दौरान किसी भी प्रकार की एकेडेमिक या गैर–एकेडेमिक समस्या के समाधान एवं मार्गदर्शन के लिए मेंटर की भूमिका बढ़ गई है। इसलिए **Vision IAS** प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा दोनों के लिए मेंटरिंग प्रोग्राम लेकर आया है।

- दक्ष (**Daksha**): आगामी वर्षों में मुख्य परीक्षा देने वाले
- लक्ष्य (**Lakshya**): मुख्य परीक्षा देने वाले अभ्यर्थियों के लिए।
- लक्ष्य प्रीलिम्स एवं मेंस इंटीग्रेटेड प्रोग्राम।

करेंट अफेयर्स (Current Affairs)– सिविल सेवा परीक्षा में प्रायः प्रश्नों को करेंट अफेयर्स से जोड़कर पूछा जाता है। इसलिए **Vision IAS** द्वारा प्रतिदिन, साप्ताहिक और मासिक आधार पर करेंट अफेयर्स के अलग–अलग स्रोत अभ्यर्थियों को उपलब्ध करवाए जाते हैं। जिनमें टॉपिक के स्टैटिक के साथ करेंट अफेयर्स के टॉपिक में महत्वपूर्ण समाचार पत्रों, सरकारी प्रकाशनों एवं वेब साइट का विश्लेषण सम्मिलित होता है।

- मासिक मैगजीन
- वीकली फोकस
- न्यूज टुडे
- **PT** 365
- **Mains** 365

स्टडी मैटेरियल– सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी में अभ्यर्थियों को गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री उपलब्ध करवाने के लिए **Vision IAS** द्वारा विभिन्न मैटेरियल उपलब्ध कराए जाते हैं।

- क्लासरूम स्टडी मैटेरियल
- वैल्यू एडेड मैटेरियल
- मासिक मैगजीन, वीकली फोकस, न्यूज टुडे
- **PT** 365 एवं **Mains** 365
- केन्द्रीय बजट एवं आर्थिक सर्वेक्षण सारांश
- विगत वर्षों के प्रश्नों (**PYQs**) का विस्तृत विश्लेषण
- टॉपर्स कॉपी

Student Wellness Cell – देश की प्रतिष्ठित सेवा एवं उसकी भर्ती प्रक्रिया कई बार बोझिल हो जाती है, जिससे अभ्यर्थी चिंता, तनाव, अवसाद जैसी मानसिक समस्याओं का सामना करते हैं। जिसे ध्यान में रखकर **Vision IAS** द्वारा स्टूडेंट वेलनेस सेल की स्थापना की गई है। इसमें अभ्यर्थी प्रशिक्षित काउंसलर और प्रोफेशनल मनोविशेषज्ञ से मिलकर अपनी समस्या साझा करते हुए समाधान प्राप्त कर सकते हैं।

भारत के वित्तीय क्षेत्रक के साइबर सुरक्षा पहलू

- रिपोर्टों से पता चलता है कि रिपोर्ट की गई सभी **साइबर अटैक घटनाओं में से लगभग पाँचवीं** घटना में वित्तीय संस्थान शामिल हैं, जिनमें बैंक सबसे अधिक प्रभावित हैं।
- **आईएमएफ** की अप्रैल 2024 की **वैश्विक वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट** के अनुसार, साइबर अटैक के कारण अत्यधिक **वित्तीय नुकसान** हुआ है, जो वर्ष 2017 के बाद से चार गुना बढ़ कर **2.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर** हो गया है।

दिवाला और शोधन अक्षमता कानून की प्रभावकारिता

- दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता के तहत, सितंबर 2024 तक 1,068 योजनाओं के समाधान में **3.6 लाख करोड़ रुपए** की वसूली हुई।
  - यह परिसमापन मूल्य (liquidation value) के मुकाबले **161%** और शामिल परिसंपत्तियों के उचित मूल्य (फेयर वैल्यू) का **86.1%** है।

भावी परिदृश्य

- **चुनौती:** नीति और व्यापक आर्थिक परिणामों को आकार देने में कुछ वित्तीय बाजारों का प्रभुत्व बड़ी चुनौती है जिसे **'वित्तीयकरण' (Financialization)** परिघटना के रूप में जाना जाता है।
  - इसके कारण उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के ऋण का स्तर काफी बढ़ गया (इनमें से कुछ ऋण तो विनियामकों को दिखाई देते हैं और कुछ नहीं)।
- **आगे की राह:** भारत को एक ओर वित्तीय क्षेत्रक के **विकास और संवृद्धि** तथा दूसरी ओर **'वित्तीयकरण'** के बीच अच्छा संतुलन बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए।

एक-पंक्ति में सारांश

भारत की मौद्रिक नीति स्थिर बनी हुई है, जो मुद्रास्फीति नियंत्रण और आर्थिक संवृद्धि सुनिश्चित करती है, जबकि मजबूत बैंकिंग सुधार, एनबीएफसी निगरानी और डिजिटल वित्तीय विस्तार वित्तीय क्षेत्रक की मजबूती को बढ़ावा देते हैं।

UPSC के लिए प्रासंगिकता

- *बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र सुधार (GS-3: भारतीय अर्थव्यवस्था, मौद्रिक एवं राजकोषीय नीति)*
- *मुद्रास्फीति प्रबंधन और RBI की भूमिका (GS-3: अर्थव्यवस्था, संवृद्धि और स्थिरता)*
- *फिनटेक, डिजिटल बैंकिंग और वित्तीय समावेशन (GS-3: डिजिटल अर्थव्यवस्था और उभरती प्रौद्योगिकियां)*
- *पूंजी बाजार सुधार और निवेश प्रवृत्तियाँ (GS-3: आर्थिक विकास, उद्योग)*

अध्याय 3: बाह्य क्षेत्रक: FDI को व्यवस्थित रूप देना (External Sector: Getting FDI Right)

परिचय

आर्थिक नीतियों और व्यापार नीति में अनिश्चितताओं को लेकर वैश्विक चिंताओं के बावजूद भारत का बाह्य क्षेत्र (एक्सटर्नल सेक्टर) मजबूती से प्रदर्शन करता रहा।

वैश्विक व्यापार गतिशीलता

- नवंबर 2023 में **लाल सागर में शुरू हुए व्यवधानों** की वजह से अन्य व्यापार मार्गों को अपनाने के लिए मजबूर होना पड़ा। इससे नौपरिवहन लागत बढ़ गई और गंतव्य तक वस्तुओं को पहुंचाने में भी देरी हुई।
- **होर्मुज स्ट्रेट में जारी संघर्ष ने** ऊर्जा व्यापार को बाधित किया, और इससे ऊर्जा की कीमतों में वृद्धि दर्ज की गई। गौरतलब है कि 21 प्रतिशत वैश्विक पेट्रोलियम लिक्विड की आपूर्ति **होर्मुज स्ट्रेट** से गुजरती है।
- **जलवायु परिवर्तन की वजह से अनिश्चितताओं का बढ़ना:** उदाहरण के लिए, हाल में सूखा की वजह से पनामा नहर में जल की कमी हो गई। इस वजह से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार प्रभावित हुआ। गौरतलब है कि 5 प्रतिशत वैश्विक समुद्री व्यापार पनामा नहर से होकर गुजरता है।
- वर्ष 2022 के अंत से **समान राजनीतिक सोच वाले देशों के बीच व्यापार[5] में उल्लेखनीय वृद्धि** हुई है। यह समान भू-राजनीतिक रुख वाले देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार को प्राथमिकता देने की बढ़ती प्रवृत्ति को दर्शाता है।

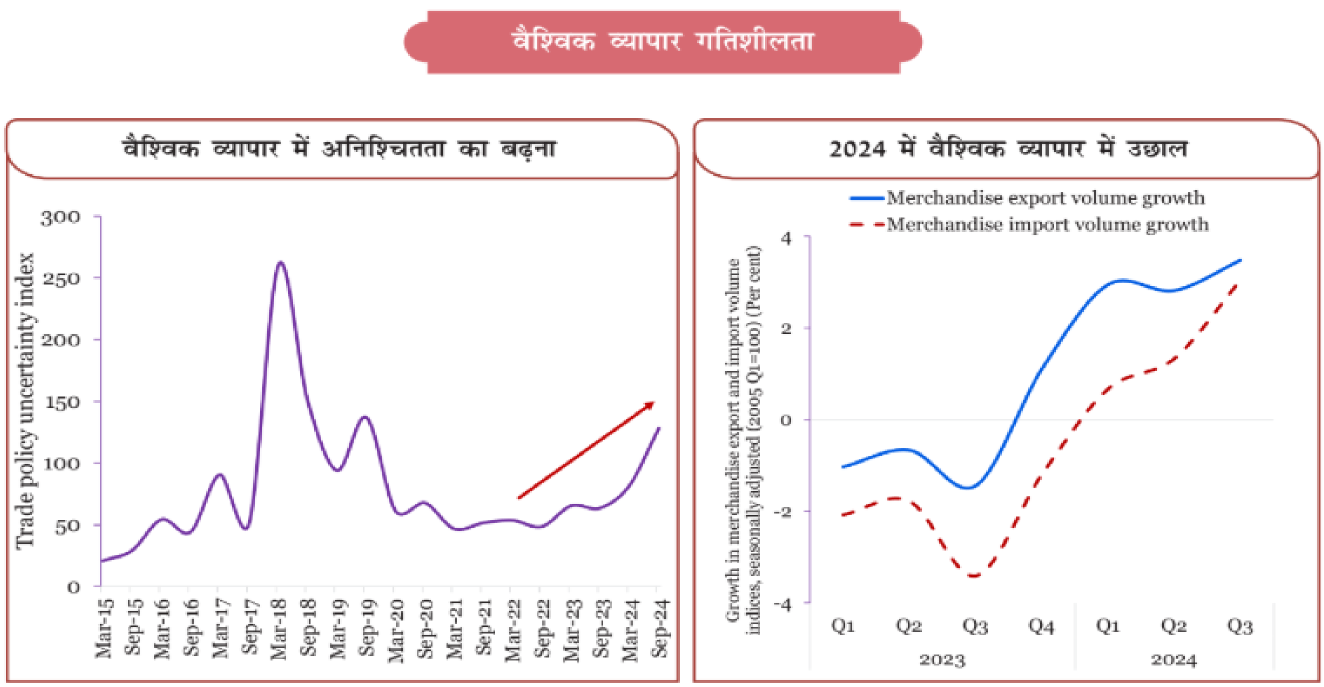

2024 में वैश्विक व्यापार का प्रदर्शन

- विश्व व्यापार संगठन (WTO) के अनुसार 2024 की तीसरी तिमाही में विगत वर्ष की समान अवधि (YoY) से वैश्विक माल/पण्य निर्यात (Merchandise export) और पण्य आयात में क्रमशः **3.5 प्रतिशत और 3 प्रतिशत** की वृद्धि दर्ज की गई (मौसमी रूप से समायोजित, 2005 की प्रथम तिमाही को 100 मानते हुए)।
    - समान अवधि (YoY) में **वैश्विक सेवा निर्यात और आयात में क्रमशः 7.9 प्रतिशत और 6.7 प्रतिशत की वृद्धि** दर्ज की गई।

5 Political proximity of trade

© Vision IAS

वित्त वर्ष 2025 के पहले आठ महीनों में भारत का व्यापार प्रदर्शन

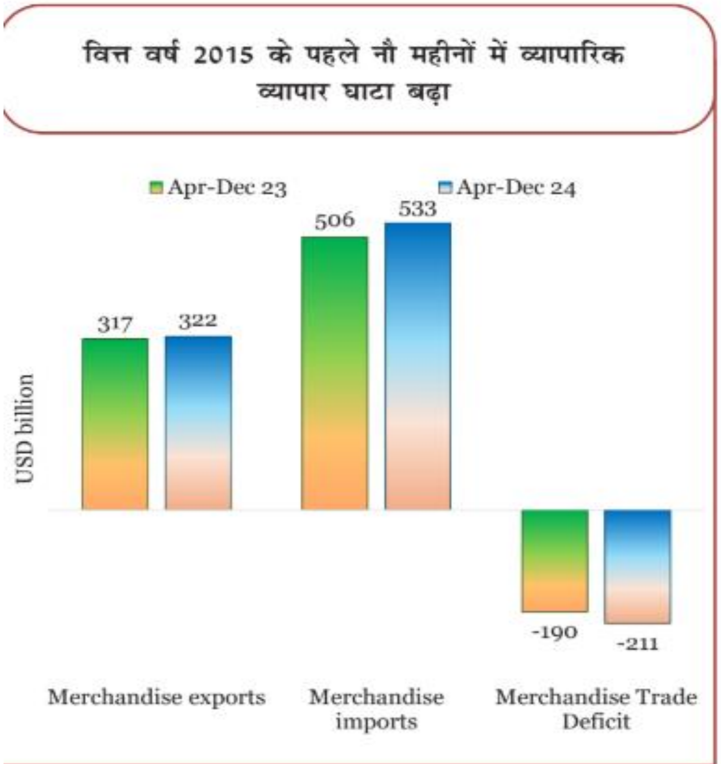

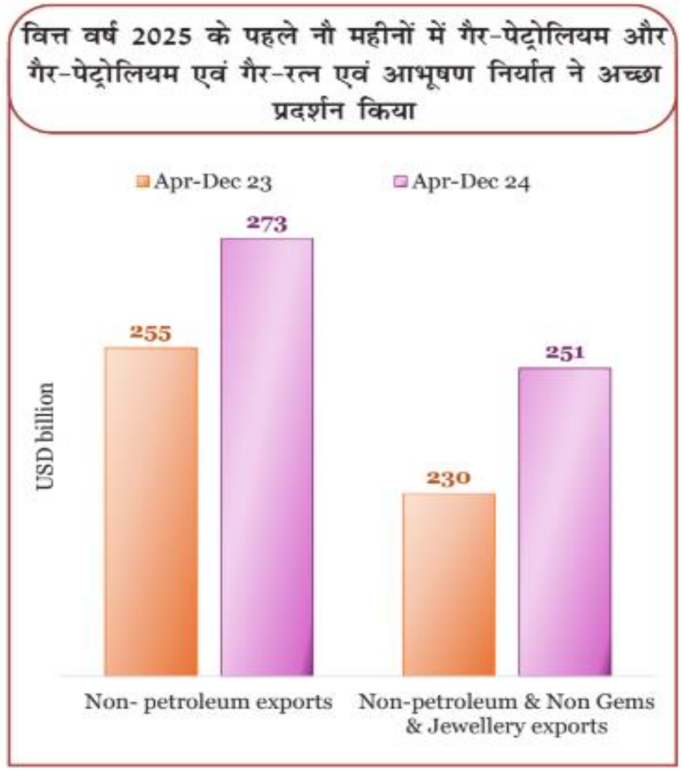

टैरिफ नीतियां

- मुक्त व्यापार पर बढ़ते जोर और WTO के तहत अंतरराष्ट्रीय व्यापार नीतियों में बढ़ते सहयोग से देशों के बीच सीमा शुल्क में कमी आई है।
  - उदाहरण के लिए, 2000 से 2024 के बीच भारत में शुल्क योग्य मदों पर औसत टैरिफ दरें **48.9 प्रतिशत से घटकर 17.3 प्रतिशत** हो गई, जबकि चीन में वे 16.4 प्रतिशत से घटकर 8.3 प्रतिशत हो गई।

गैर-टैरिफ उपाय (NTMs)

- **ग्लोबल ट्रेड अलर्ट** डेटाबेस से पता चलता है कि 2020 और 2024 के बीच व्यापार और निवेश से संबंधित **26,000 से अधिक नए प्रतिबंध** वैश्विक स्तर पर लगाए गए हैं।
- **NTMs से सबसे अधिक प्रभावित होने वाले क्षेत्रकों** में कृषि, विनिर्माण और प्राकृतिक संसाधन शामिल हैं।

भारत के व्यापार प्रदर्शन का रुझान

- भारत के कुल निर्यात (माल+ सेवाएँ) ने **वित्त वर्ष 25 के पहले नौ महीनों** में विगत वित्त वर्ष की समान अवधि की तुलना में **6 प्रतिशत** की वृद्धि दर्ज की है।
  - इसी दौरान **सेवा क्षेत्रक** में **11.6%** की वृद्धि दर्ज की गई है।
  - इसी अवधि के दौरान सतत घरेलू मांग के कारण कुल आयात 6.9 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज करते हुए 682.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया।
- भारत **'दूरसंचार, कंप्यूटर और सूचना सेवाओं'** के वैश्विक निर्यात बाजार में 10.2% की हिस्सेदारी रखता है और **इस मामले में विश्व में दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक** है (UNCTAD)।

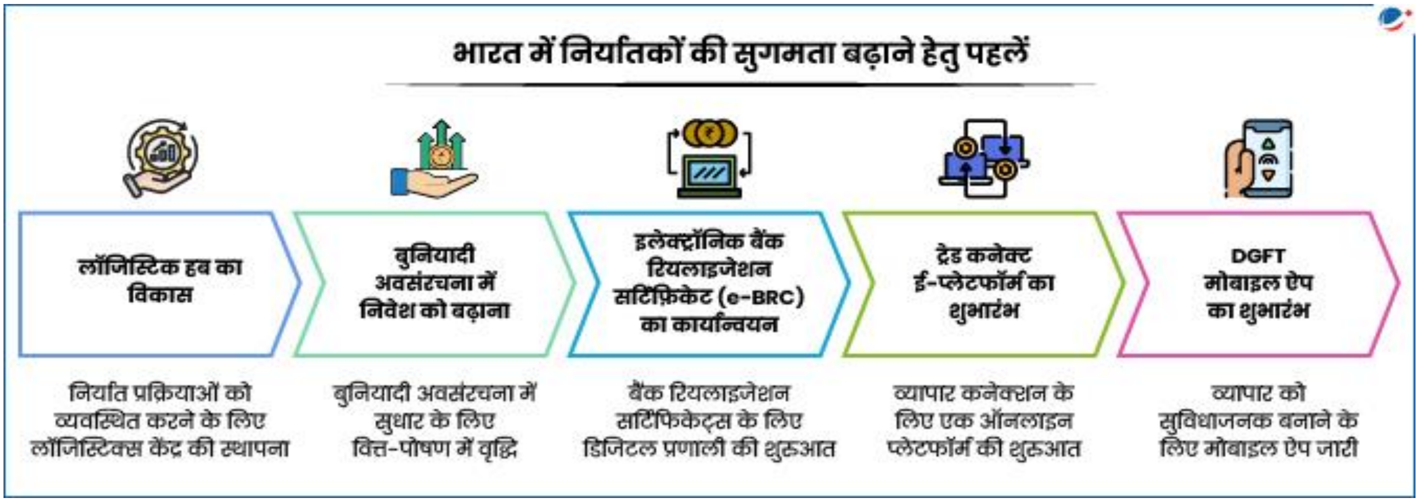

भारत का भुगतान संतुलन: चुनौतियों के बीच बेहतर प्रदर्शन

- **चालू खाता:** चालू खाता घाटा (CAD)[6] वित्त वर्ष 2025 की दूसरी तिमाही में **थोड़ा कम होकर जीडीपी के 1.2 प्रतिशत** हो गया, जो बढ़ती **निवल सेवा क्षेत्रक आय** और निजी धन-अंतरण आय में वृद्धि द्वारा समर्थित था।
- **पूंजी और वित्तीय खाता: वित्त वर्ष 23 की पहली तिमाही से वित्त वर्ष 25 की दूसरी तिमाही** तक की अवधि में, भारत ने आम तौर पर **पूंजी खाते में अधिशेष** दर्ज किया, जो मुख्य रूप से अधिक FDI, FPI और विदेशी ऋण प्राप्ति की वजह से है।

भारत में FDI प्राप्ति का प्रदर्शन

- वित्त वर्ष 24 की तुलना में वित्त वर्ष 25 में **सकल विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI)** प्राप्ति में **17.9%** की वृद्धि हुई।
- यदि लंबी अवधि की बात करें तो, भारत में **प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्राप्ति** अप्रैल 2000 से सितंबर 2024 तक **1 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर** के आंकड़े को पार कर गया।

विदेशी मुद्रा आरक्षित निधि (Foreign Exchange Reserves of India)

- **भारत की विदेशी मुद्रा आरक्षित निधि** में विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां (FCA), सोना, विशेष आहरण अधिकार (SDRs) और IMF में रिजर्व ट्रेंच स्थिति (RTP) शामिल हैं।
- दिसंबर 2024 के अंत तक यह 640.3 बिलियन अमरीकी डॉलर था, जो **10.9 महीने के आयात** और विदेशी ऋण के **लगभग 90 प्रतिशत** को कवर करने के लिए पर्याप्त है।

भारत की विदेशी ऋण की स्थिति

- भारत का विदेशी ऋण पिछले कुछ वर्षों में स्थिर रहा और सितंबर 2024 के अंत में **विदेशी ऋण-GDP का अनुपात 19.4 प्रतिशत** हो गया।

भावी परिदृश्य

- हाल के वर्षों में **वैश्विक व्यापार की गतिशीलता** में काफी बदलाव आया है। यह वैश्वीकरण से व्यापार संरक्षणवाद की ओर बढ़ रही है, जिसके साथ अनिश्चितता भी बढ़ी है।
- **प्रतिस्पर्धी बने रहने और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में अपनी भागीदारी बढ़ाने के लिए,** भारत को निर्यात प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के लिए व्यापार लागत को कम करना और व्यापार सुविधा में सुधार करना जारी रखना चाहिए।

---

[6] Current account deficit

© Vision IAS

एक-पंक्ति में सारांश

निरंतर FDI अंतर्वाह, बढ़ते सेवा निर्यात और संतुलित व्यापार रणनीति के साथ भारत का बाह्य क्षेत्रक मजबूत बना हुआ है; हालांकि व्यापार प्रतिबंध, आपूर्ति श्रृंखला की कमजोरियों और वैश्विक मंदी जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए रणनीतिक व नीतिगत कदम उठाने की आवश्यकता है।

UPSC के लिए प्रासंगिकता

- *भारत की व्यापार नीति एवं मुक्त व्यापार समझौते (GS-3: अर्थव्यवस्था, व्यापार एवं वाणिज्य)*
- *प्रत्यक्ष विदेशी निवेश एवं व्यापार सुगमता (GS-3: भारतीय अर्थव्यवस्था, निवेश नीतियाँ)*
- *भुगतान संतुलन एवं विदेशी मुद्रा भंडार (GS-3: बाह्य क्षेत्रक एवं मैक्रोइकोनॉमिक्स)*
- *वैश्विक व्यापार नीतियों का प्रभाव (GS-2: अंतर्राष्ट्रीय संबंध, GS-3: WTO एवं व्यापार समझौते)*

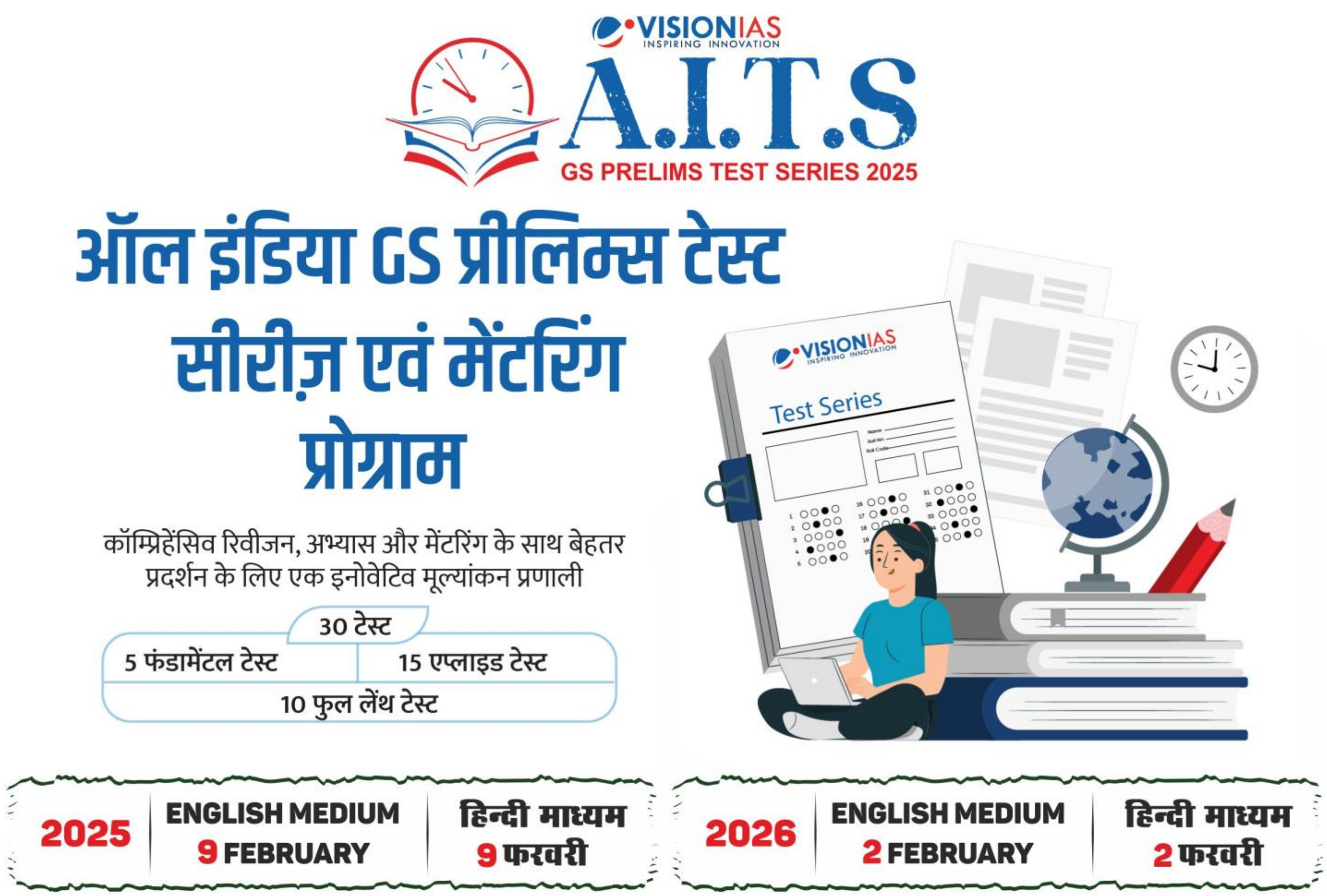

अध्याय 4: कीमतें और मुद्रास्फीतिः उतार-चढ़ाव को समझना (Prices and Inflation: Understanding the Dynamics)

परिचय

- IMF के अनुसार **वैश्विक मुद्रास्फीति** 2022 में 8.7 प्रतिशत के उच्चतम स्तर पर थी, जो **2024 में घटकर 5.7 प्रतिशत** हो गई।
- **कोर मुद्रास्फीति:** एक दशक के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई।

घरेलू मुद्रास्फीति

- **भारत की खुदरा मुद्रास्फीति (रिटेल इन्फ्लेशन):** FY24 की 5.4% से घटकर FY25 (अप्रैल-दिसंबर 2024) में 4.9% हो गई।
- **खुदरा मुद्रास्फीति में गिरावट का कारण: कोर मुद्रास्फीति में** वित्त वर्ष 2024 और वित्त वर्ष 2025 के बीच 0.9 प्रतिशत बिंदु की **गिरावट** दर्ज की गई, जो मुख्य रूप से **कोर सेवा मुद्रास्फीति** और **ईंधन मूल्य मुद्रास्फीति** में कमी के कारण हुई।
    - कोर मुद्रास्फीति में गिरावट मुख्य रूप से **कोर सेवा मुद्रास्फीति** के कारण हुई, जो **कोर वस्तु मुद्रास्फीति से कम रही।**

खाद्य मुद्रास्फीति (फूड इन्फ्लेशन)

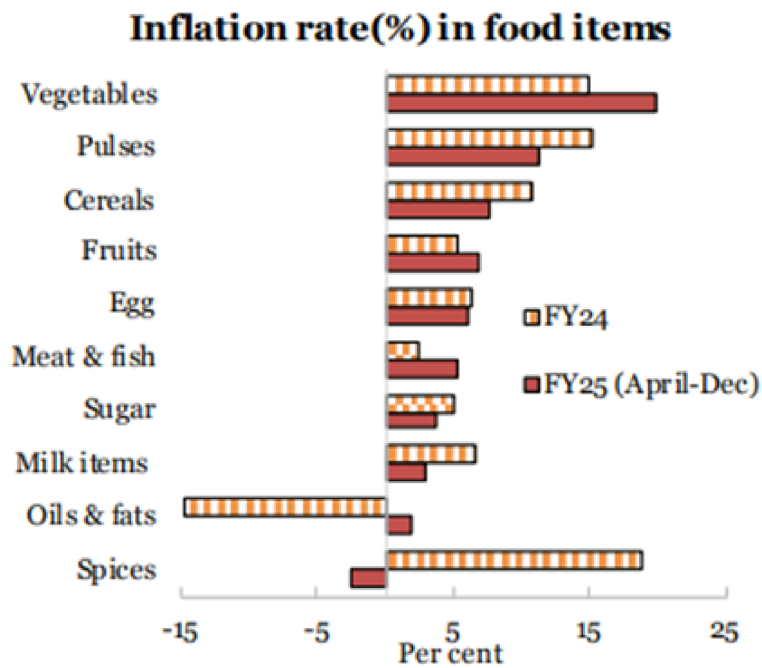

- पिछले दो वर्षों में भारत की खाद्य मुद्रास्फीति दर स्थिर बनी हुई है।
    - **चरम मौसम संबंधी घटनाएं** (चक्रवात, भारी वर्षा, ओलावृष्टि, सूखा, लू आदि) **सब्जी उत्पादन** (मुख्य रूप से प्याज और टमाटर) और **आपूर्ति श्रृंखलाओं** को प्रभावित करती हैं, जिससे **खुदरा कीमतों पर असर पड़ता है।**
- **उपभोक्ता खाद्य मूल्य सूचकांक (CFPI)** वित्त वर्ष 2024 के 7.5% से बढ़कर वित्त वर्ष 2025 में 8.4% हो गया, जिसका प्रमुख कारण कुछ खाद्य पदार्थों, विशेष रूप से सब्जियों और दालों की कीमतों में वृद्धि है।
    - CPI बास्केट से तीन सबसे अधिक मूल्य-संवेदनशील सब्जियों; **टमाटर, प्याज और आलू** (TOP) को बाहर करने पर वित्त वर्ष 2025 में **औसत खाद्य मुद्रास्फीति दर 6.5 प्रतिशत** रही।
- **खाद्य मुद्रास्फीति को कम करने के लिए प्रशासनिक उपाय:**
    - **अनाज:** गेहूं पर **भंडारण सीमा (स्टॉक लिमिट)** लगाई गई; खुले बाजार बिक्री योजना (OMSS) के तहत **केंद्रीय भंडार से गेहूं और चावल** जारी किए गए; भारत ब्रांड के तहत गेहूं का आटा और चावल की बिक्री की गई।
    - **दालें: भारत ब्रांड के तहत** चना दाल, मूंग दाल और मसूर दाल की बिक्री की गई; तूर और देसी चना पर **भंडारण सीमा लागू की गई**; देसी चना, तूर, उड़द, मसूर और पीली मटर के **शुल्क-मुक्त आयात की अनुमति** दी गई।
    - **सब्जियां: प्याज का बफर स्टॉक** (मूल्य स्थिरीकरण कोष के तहत 4.7 लाख मीट्रिक टन रबी प्याज की खरीद की गई) रखा गया; सब्सिडी पर प्याज और टमाटर की बिक्री की गई।

भावी परिदृश्य

- **उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति (CPI):** भारतीय रिजर्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के अनुमान के अनुसार भारत की उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति वित्त वर्ष 2026 में मुद्रास्फीति लक्ष्य के अनुरूप रहेगी।

 © Vision IAS

- **मुद्रास्फीति दर:** अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने भारत के लिए **वित्त वर्ष 2025 में 4.4 प्रतिशत** और **वित्त वर्ष 2026 में 4.1 प्रतिशत** की मुद्रास्फीति दर का अनुमान लगाया है।
- **हेडलाइन मुद्रास्फीति:** मानसून सामान्य रहने और भविष्य में कोई बाहरी या नीतिगत आघात न आने पर भारतीय रिजर्व बैंक को उम्मीद है कि वित्त **वर्ष 2026** में हेडलाइन मुद्रास्फीति **4.2 प्रतिशत** होगी।

दीर्घकालिक मूल्य स्थिरता सुनिश्चित करने के उपाय

- **जलवायु-अनुकूल फसल किस्मों का विकास को बढ़ावा देना चाहिए**, जिससे उत्पादन में वृद्धि हो और फसलों के नुकसान को कम किया जा सके।
- **किसानों को प्रशिक्षण प्रदान करना** चाहिए ताकि वे प्रमुख उत्पादक क्षेत्रों में दालों, टमाटर और प्याज की खेती के लिए सर्वोत्तम पद्धतियों; उच्च उत्पादकता वाली और रोग-प्रतिरोधी बीज किस्मों का उपयोग कर सकें।
- **मूल्य, स्टॉक, भंडारण (स्टोरेज) और प्रसंस्करण सुविधाओं की निगरानी के लिए मजबूत डेटा संग्रह और विश्लेषण प्रणाली लागू करना चाहिए**, जिससे अलग-अलग स्तरों पर सरकारें डेटा आधारित नीतिगत निर्णय ले सकें।

एक-पंक्ति में सारांश

भारत में मुद्रास्फीति स्थिर बनी हुई है, लेकिन इस पर खाद्य कीमतों में अस्थिरता, ईंधन मूल्य में उतार-चढ़ाव और आपूर्ति श्रृंखला बाधाओं से जोखिम बना हुआ है, जिससे सख्त मौद्रिक नीति और आपूर्ति-पक्ष संबंधी उपाय आवश्यक हो जाते हैं।

UPSC के लिए प्रासंगिकता

- *मुद्रास्फीति प्रवृत्तियां एवं भारतीय रिज़र्व बैंक की भूमिका (GS-3: अर्थव्यवस्था, मौद्रिक नीति)*
- *आपूर्ति श्रृंखला एवं खाद्य मूल्य स्थिरता (GS-3: कृषि, आर्थिक विकास)*
- *ऊर्जा सुरक्षा एवं ईंधन मूल्य प्रभाव (GS-3: पर्यावरण एवं अर्थव्यवस्था)*
- *सरकारी कल्याणकारी योजनाएं एवं मूल्य नियंत्रण (GS-2: सुशासन, GS-3: सामाजिक सुरक्षा)*

अध्याय 5: मध्यम अवधि का परिदृश्यः गैर-विनियमन से विकास को बढ़ावा (Medium Term Outlook: Deregulation Drives Growth)

परिचय

- भारत को 2047 तक विकसित भारत बनने की अपनी आर्थिक आकांक्षाओं को साकार करने के लिए आगामी **एक या दो दशक तक स्थिर मूल्यों पर औसतन 8% की संवृद्धि दर प्राप्त करने की आवश्यकता** है।
- **IMF के वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक** का अनुमान है कि भारत वित्त वर्ष 2028 तक 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था बन जाएगा। वहीं, यह **वित्त वर्ष 2030 तक 6.307 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर** की अर्थव्यवस्था बन जाएगा।
- भारत के मध्यम अवधि के विकास परिदृश्य का मूल्यांकन बदलती वैश्विक परिस्थितियों के संदर्भ में किया जाना चाहिए, जिसमें भू-आर्थिक विखंडन या बिखराव, चीन की बढ़ती विनिर्माण क्षमता और एनर्जी ट्रांजिशन प्रयासों में उस पर निर्भरता जैसे कारक शामिल हैं।

भू-आर्थिक विखंडन (Geo-Economic Fragmentation: GEF)

- **वैश्विक आर्थिक एकीकरण में नीति-संचालित बदलाव (reversal)** को भू-आर्थिक विखंडन (GEF) कहा जाता है। यह **अक्सर रणनीतिक** विचारों द्वारा निर्देशित होता है।
  - इस प्रक्रिया में व्यापार, पूंजी और प्रवासन प्रवाह सहित विभिन्न चैनल शामिल हैं, जिनके माध्यम से विखंडन वैश्विक अर्थव्यवस्था को नया आकार दे रहा है।
  - GEF वैश्वीकरण का स्थान ले रहा है, जिससे आसन्न आर्थिक पुनर्गठन और पुनः समायोजन हो रहा है।
    - UNIDO[7] ने अनुमान लगाया है कि **2030 तक वैश्विक विनिर्माण का 45% हिस्सा चीन के पास** होगा और यह **अमेरिका तथा उसके सहयोगियों से आगे निकल** जाएगा।

चार्ट V.3: व्यापार और निवेश संबंधी प्रतिबंधों का विस्तार

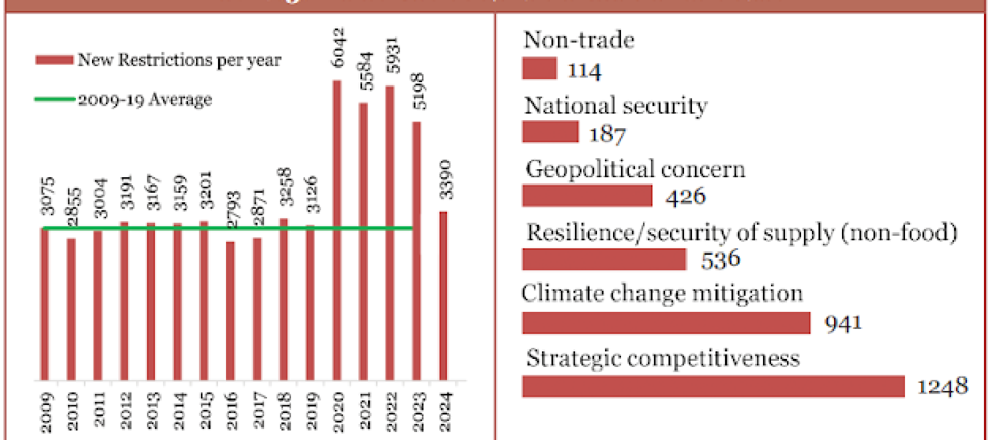

ग्लोबल ट्रेड अलर्ट डेटा

    - चीन सोलर पैनल्स (पॉलीसिलिकॉन, सिल्लियां, वेफर्स, सेल और मॉड्यूल) और दुनिया की बैटरी विनिर्माण क्षमता में लगभग 80% हिस्सेदारी के साथ एनर्जी ट्रांजिशन प्रौद्योगिकियों पर हावी है।

---

[7] United Nations Industrial Development Organization

© Vision IAS

- **GEF के निहितार्थ:**
    - **व्यापार और निवेश संबंधी प्रतिबंधों में वृद्धि:** 2020 और 2024 के बीच, वैश्विक स्तर पर व्यापार और निवेश से संबंधित 24000 से अधिक नए प्रतिबंध लागू किए गए हैं।
    - **संकेंद्रित FDI प्रवाह:** वैश्विक FDI प्रवाह भू-राजनीतिक रूप से संरेखित देशों के बीच तेजी से केंद्रित हो रहा है। इससे उभरते बाजारों और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं की सुभेद्यता बढ़ रही है।

अविनियमन और आर्थिक स्वतंत्रता: विकास के लिए उत्प्रेरक

- राज्य निम्नलिखित **तीन-चरणीय प्रक्रिया का पालन करके अपनी लागत-प्रभावशीलता** के लिए नियमों की समीक्षा करके व्यवस्थित विनियमन अपना सकते हैं:
    - **ईज ऑफ डूइंग बिजनेस (EODB) 2.0 के तहत विनियमन के लिए क्षेत्रकों की पहचान करना और एक व्यवहार्य मित्तलस्टैंड** यानी भारत के SME क्षेत्रक का निर्माण करना।
    - **अन्य राज्यों और देशों के साथ नियमों** की तुलना करना।
    - प्रत्येक उद्यमों पर इनमें से प्रत्येक विनियम की लागत का अनुमान लगाना।

एक-पंक्ति में सारांश

भारत का मध्यम अवधि का विकास दृष्टिकोण विनियमन, निवेश-आधारित विकास और कौशल विकास से प्रेरित होकर मजबूत बना हुआ है, हालांकि, वैश्विक आर्थिक जोखिमों के साथ-साथ रोजगार और बुनियादी ढांचे से जुड़ी घरेलू चुनौतियों पर निरंतर नीतिगत माध्यमों से ध्यान देने की आवश्यकता है।

UPSC के लिए प्रासंगिकता

- *आर्थिक संवृद्धि और संरचनात्मक सुधार (GS-3: भारतीय अर्थव्यवस्था, अवसंरचना और औद्योगिक नीतियां)।*
- *व्यापार और वैश्विक आर्थिक रुझान (GS-2: अंतर्राष्ट्रीय संबंध, GS-3: बाह्य क्षेत्रक)।*
- *रोजगार एवं कौशल विकास (GS-3: शिक्षा एवं श्रम बाजार में सुधार)।*
- *निवेश और औद्योगिक प्रतिस्पर्धात्मकता (GS-3: MSME संवृद्धि, ईज ऑफ डूइंग बिजनेस)।*

अध्याय 6: निवेश और अवसंरचना: अनवरत रहे (Investment and Infrastructure: Keeping It Going)

परिचय

- पिछले पांच वर्षों में सरकार का मुख्य ध्यान बुनियादी ढांचे **(भौतिक, डिजिटल और सामाजिक)** पर **सार्वजनिक खर्च बढ़ाने और अनुमोदन तथा संसाधन जुटाने में तेजी** लाने पर था।
- वित्त वर्ष 2020 से वित्त वर्ष 2024 तक प्रमुख बुनियादी ढांचा क्षेत्रकों पर केंद्र सरकार का पूंजीगत व्यय 38.8% की दर से बढ़ा है।

अवसंरचना क्षेत्रकों में विकास

भौतिक अवसंरचना	
रेलवे क्षेत्रक	**वर्तमान स्थिति** • अप्रैल-अक्टूबर 2024 के बीच, **17 नई वंदे भारत ट्रेन रेलवे नेटवर्क में शामिल की गईं।** • **91 गति शक्ति मल्टी-मॉडल कार्गो टर्मिनल** चालू किया गया। • भारतीय रेलवे ने 2029-30 तक **30 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा का लक्ष्य** रखा है। **महत्वपूर्ण पहलें** • **स्वचालित ब्लॉक सिग्नलिंग:** इसे **उच्च घनत्व वाले मार्गों पर क्षमता** बढ़ाने के लिए स्थापित किया गया है। • **मुंबई-अहमदाबाद हाई-स्पीड रेल परियोजना:** इसे 2015 में स्वीकृत किया गया था। **508 किलोमीटर** की इस परियोजना को जापान द्वारा समर्थित किया गया था।
सड़क क्षेत्रक	**वर्तमान स्थिति** • **भारत में कुल 63.4 लाख कि.मी. का सड़क नेटवर्क** है। इसमें 146,195 कि.मी. का राष्ट्रीय राजमार्ग (NH) नेटवर्क शामिल है। राष्ट्रीय राजमार्ग कुल सड़क माल यातायात का लगभग 40% वहन करता है। • **वित्तीय वर्ष 2025 में 5853 कि.मी. राष्ट्रीय राजमार्ग का निर्माण** किया गया। **महत्वपूर्ण पहलें** • **भारतमाला परियोजना:** यह 2017 में लॉन्च की गई थी। इसका लक्ष्य 34,800 कि.मी. राष्ट्रीय राजमार्ग विकसित करना है। ○ 2024 तक, लगभग 76% परियोजनाएँ (26,425 कि.मी.) आवंटित की जा चुकी हैं और 18,926 कि.मी. का निर्माण किया जा चुका है। • **मल्टी-मॉडल लॉजिस्टिक्स पार्क (MMLP):** दिसंबर 2024 तक, चेन्नई, इंदौर, नागपुर, जालना, जोगीघोपा और बैंगलोर में छह MMLP प्रदान किए गए हैं।
नागरिक उड्डयन क्षेत्रक	**वर्तमान स्थिति** • हवाई अड्डे की **कार्गो हैंडलिंग क्षमता धीरे-धीरे** बढ़ रही है, जो **वित्त वर्ष 2024 में 8.0 मिलियन मीट्रिक टन** तक पहुंच गई है। **महत्वपूर्ण पहलें** • **उड़ान योजना:** दो वाटर एयरोड्रोम्स और 13 हेलीपोर्ट सहित 88 हवाई अड्डों को जोड़ने वाले 619 मार्ग अब तक शुरू किए जा चुके हैं।
बंदरगाह, पोत परिवहन और अंतर्देशीय जलमार्ग क्षेत्रक	**वर्तमान स्थिति** • **परिचालन दक्षता में सुधार और प्रमुख बंदरगाहों में औसत कंटेनर टर्नअराउंड समय में कमी** {वित्त वर्ष 2014 में 48.1 घंटे से वित्त वर्ष 2015 (अप्रैल-नवंबर) के दौरान 30.4 घंटे}। • **सागरमाला कार्यक्रम के तहत की गई प्रगति यह** दर्शाती है कि **पोत आधुनिकीकरण और बंदरगाह** के नेतृत्व वाले औद्योगीकरण में परियोजना पूर्णता की दर उच्चतम है।

	महत्वपूर्ण पहलें • **चाबहार बंदरगाह और INSTC:** चाबहार में शाहिद बेहिश्ती बंदरगाह INSTC के माध्यम से मुंबई को यूरेशिया से जोड़ता है। ○ यह **परिवहन लागत और समय को कम** करता है। इससे वित्त वर्ष 2014 के लिए जहाज यातायात में 43% की वृद्धि और कंटेनर यातायात में 34% की वृद्धि होती है। • **हरित नौका दिशा-निर्देश:** इसे 2024 में लॉन्च किया गया था। इसका लक्ष्य अगले दस वर्षों में 1,000 अंतर्देशीय जहाजों को हरित करना है।
ऊर्जा क्षेत्रक	
विद्युत क्षेत्रक	**वर्तमान स्थिति** • नवंबर 2024 तक स्थापित क्षमता **साल-दर-साल 7.2% से बढ़कर 456.7 गीगावॉट** हो गई। • भारत की कुल स्थापित क्षमता में **नवीकरणीय ऊर्जा की हिस्सेदारी अब 47%** है। • कुल नवीकरणीय ऊर्जा स्थापित क्षमता में **सालाना 15.8% की वृद्धि** हुई है। यह दिसंबर 2023 के 180.8 गीगावॉट से बढ़कर 209.4 गीगावॉट तक पहुंच गई है। **महत्वपूर्ण पहलें** • पुनर्निर्मित वितरण क्षेत्रक योजना, **प्रधान मंत्री सहज बिजली हर घर योजना (सौभाग्य),** आदि।
डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर	
दूरसंचार क्षेत्रक	**वर्तमान स्थिति** • 31 अक्टूबर, 2024 तक सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में 5G सेवाएं शुरू कर दी गई हैं। **महत्वपूर्ण पहलें** • सभी ग्राम पंचायतों और गांवों को ब्रॉडबैंड से जोड़ने के लिए **भारत नेट परियोजना** शुरू की गई है।
सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्रक	**वर्तमान स्थिति** • नवंबर 2024 तक, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र मेघराज, GI क्लाउड पहल के तहत **अपने क्लाउड पर 1,917 एप्लीकेशन को सपोर्ट प्रदान** करता है। ○ मेघराज का उद्देश्य केंद्रीय और राज्य/ केंद्र शासित प्रदेशों के विभागों को **क्लाउड कंप्यूटिंग के माध्यम से ICT सेवाएं प्रदान** करना है। • ऐसी उम्मीद है कि **भारत में डेटा सेंटर बाजार** 2023 के 4.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2032 तक 11.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो जाएगा।
ग्रामीण और शहरी अवसंरचना	
ग्रामीण पेयजल एवं स्वच्छता क्षेत्रक	**स्थिति और पहलें** • **जल जीवन मिशन (2019):** 2019 से 12 करोड़ से अधिक परिवारों को पाइप के ज़रिए पेयजल की सुविधा प्रदान की गई है। ○ **ऐसे राज्य जिन्होंने ने 100% कवरेज हासिल किया:** अरुणाचल प्रदेश, गोवा, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, पंजाब, तेलंगाना और मिजोरम। ○ **ऐसे केंद्रशासित प्रदेश जिन्होंने 100% कवरेज हासिल किया:** अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दादरा नगर हवेली और दमन दीव और पुडुचेरी। • **स्वच्छ भारत मिशन चरण II - ग्रामीण (SBM-G):** अप्रैल-नवंबर 2024 के दौरान, 1.92 लाख गांवों को मॉडल श्रेणी के तहत क्रमिक रूप से ODF+ घोषित किया गया है। अब ODF+ गांवों की कुल संख्या 3.64 लाख हो गई।
शहरी क्षेत्रक	**स्थिति और पहलें** • **प्रधान मंत्री आवास योजना- शहरी (2015):** शहरी क्षेत्रों में 89 लाख से अधिक घर पूरे किये गये। • **शहरी परिवहन:** 29 शहरों में मेट्रो और रैपिड रेल प्रणालियों के शुरू होने या निर्माणाधीन होने से विकास हो रहा है। गौरतलब है कि वर्तमान में 23 शहरों में 1010 कि.मी. चालू स्थिति में है।

	• **कायाकल्प और शहरी परिवर्तन के लिए अटल मिशन (अमृत) योजना:** इसके तहत, नल के ज़रिए पानी की कवरेज बढ़कर 70% हो गई है। साथ ही, सीवरेज कवरेज बढ़कर 62% हो गया है।
सामरिक अवसंरचना	
पर्यटन क्षेत्रक	**स्थिति और पहलें** • **तीर्थयात्रा कायाकल्प और आध्यात्मिक संवर्धन अभियान (प्रसाद):** इसे चिन्हित तीर्थ स्थलों और विरासत शहरों में पर्यटन संबंधी बुनियादी ढांचे का विकास करने हेतु शुरू किया गया है। ○ दिसंबर 2024 तक, 48 में से 26 परियोजनाएं पूरी हो चुकी हैं। • **स्वदेश दर्शन योजना 2.0 (2022):** इसका उद्देश्य संधारणीय और जिम्मेदार पर्यटन स्थलों का विकास करना है। दिसंबर 2024 तक 76 में से 75 परियोजनाएं पूरी हो चुकी हैं।

अंतरिक्ष क्षेत्रक	**स्थिति और पहलें**
	• भारत वर्तमान में 19 संचार उपग्रह, 9 नेविगेशन उपग्रह, 4 वैज्ञानिक उपग्रह और 24 पृथ्वी अवलोकन उपग्रह सहित **56 सक्रिय अंतरिक्ष संपत्तियों को संचालित** करता है।
	• सरकार के **अंतरिक्ष विजन 2047 में चार परियोजनाएं** शामिल हैं।
	  ○ **भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन के पहले मॉड्यूल की स्थापना** हेतु **गगनयान मिशन** के तहत कई **फॉलो ऑन मिशन।**
	  ○ **चंद्रयान-4 लूनर सैंपल रिटर्न मिशन और वीनस ऑर्बिटर मिशन।**
	  ○ अगली पीढ़ी के प्रक्षेपण यान का विकास।

उच्च संवृद्धि दर को बनाए रखने के लिए बुनियादी ढांचे में निवेश बढ़ाने के तरीके

- **परिवहन आधुनिकीकरण:** एकीकृत मल्टी-मॉडल परिवहन के निर्माण संबंधी प्रयासों में तेजी लाने के साथ-साथ मौजूदा भौतिक संपत्तियों का आधुनिकीकरण करना होगा। इसे दक्षता और लास्ट-माइल कनेक्टिविटी में सुधार होगा।
- **निजी भागीदारी:** इससे कार्यक्रम और प्रोजेक्ट प्लानिंग, वित्त-पोषण, निर्माण, रख-रखाव, मुद्रीकरण और प्रभाव मूल्यांकन जैसे महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचा क्षेत्रकों में तेजी आनी चाहिए।

एक-पंक्ति में सारांश

कनेक्टिविटी, एनर्जी ट्रांजिशन और डिजिटल परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित करते हुए भारत का बुनियादी ढांचा निवेश विकास का एक प्रमुख चालक बना हुआ है, लेकिन भूमि सुधार, वित्तपोषण स्थिरता और निष्पादन गति पर नीतिगत ध्यान देने की आवश्यकता है।

UPSC के लिए प्रासंगिकता

- *अवसंरचना और आर्थिक विकास (GS-3: भारतीय अर्थव्यवस्था, सार्वजनिक निवेश)।*
- *आवास, जल और शहरी विकास के लिए सरकारी योजनाएं (GS-2: शासन, GS-3: अर्थव्यवस्था)।*
- *ऊर्जा सुरक्षा एवं नवीकरणीय ऊर्जा विस्तार (GS-3: पर्यावरण एवं अर्थव्यवस्था)।*
- *निवेश एवं सार्वजनिक-निजी भागीदारी (GS-3: आर्थिक विकास)।*

फाउंडेशन कोर्स सामान्य अध्ययन 2026
▸ प्रारंभिक, मुख्य परीक्षा और निबंध के लिए महत्वपूर्ण सभी टॉपिक का विस्तृत कवरेज
DELHI: 4 फरवरी, 11 AM | JAIPUR: 18 फरवरी | JODHPUR: 3 दिसंबर | प्रवेश प्रारम्भ BHOPAL | LUCKNOW
Scan the QR CODE to download VISION IAS App. Join official telegram group for daily MCQs & other updates.
/visionias.upsc /c/VisionIASdelhi /c/VisionIASdelhi /t.me/s/VisionIAS_UPSC
DELHI: HEAD OFFICE: 1st floor, Apsara Arcade, Near Gate-7 Karol Bagh Metro Station, 1/8 b, Pusa Road, Karol Bagh, Delhi – 110005 | CONTACT: 8468022022, 9019066066
AHMEDABAD | BENGALURU | BHOPAL | CHANDIGARH | GUWAHATI | HYDERABAD | JAIPUR | JODHPUR | LUCKNOW | PRAYAGRAJ | PUNE | RANCHI

अध्याय 7: उद्योग: समग्र व्यावसायिक सुधार (Industry: All About Business Reforms)

परिचय

- भारत में विनिर्माण क्षेत्रक में **वित्त वर्ष 2025 में 6.2% की वृद्धि** होने का अनुमान है। इसमें **विद्युत व निर्माण क्षेत्रक में प्रगति** का महत्वपूर्ण योगदान होगा।
- वर्तमान में, वैश्विक विनिर्माण क्षेत्रक में भारत की हिस्सेदारी **2.8%** है, जबकि **चीन** की हिस्सेदारी **28.8%** है। इस प्रकार, वर्तमान वित्त वर्ष भारत के लिए संवृद्धि हेतु महत्वपूर्ण अवसर ला रहा है।

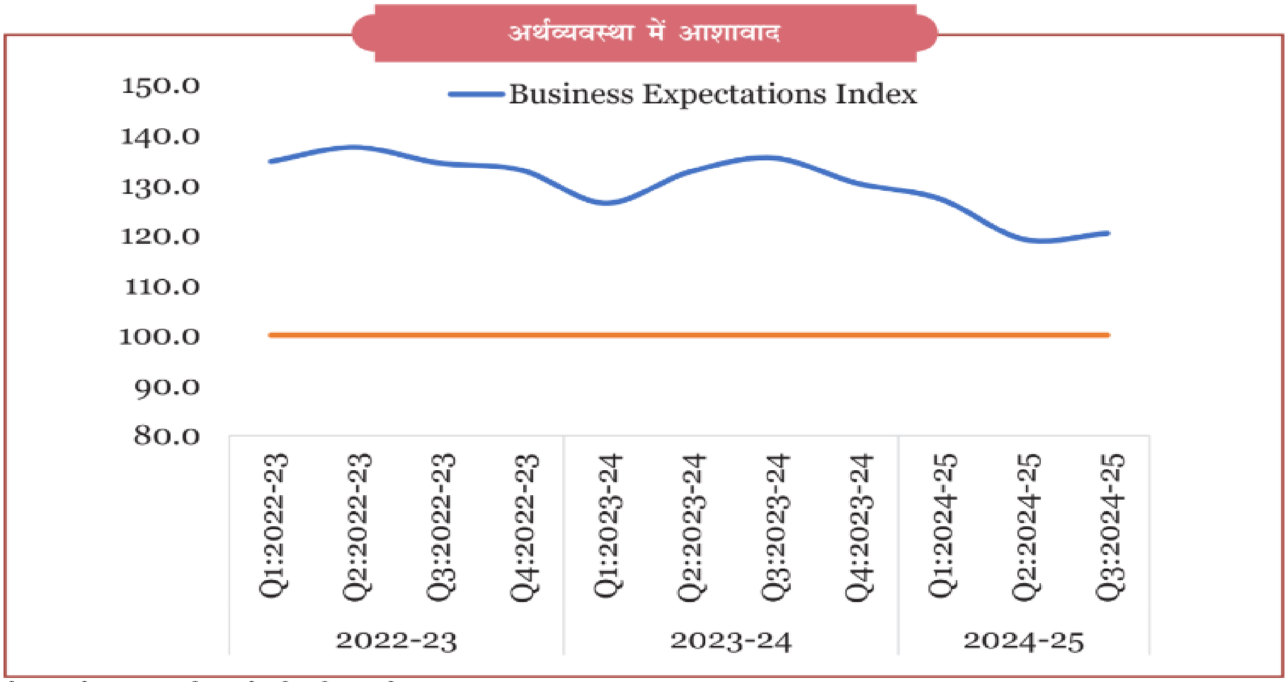

नोट: 100 से कम आशावादी 100 से अधिक निराशावादी

कोर इनपुट उद्योग (Core Input Industries)

- **सीमेंट:** भारत विश्व का **दूसरा सबसे बड़ा सीमेंट उत्पादक** देश है। घरेलू सीमेंट की खपत प्रति व्यक्ति लगभग **290 किलोग्राम** है, जबकि **वैश्विक औसत 540 किलोग्राम प्रति व्यक्ति** है।
- **इस्पात:** इस्पात की मांग अंतिम उपयोगकर्ता क्षेत्रकों में वृद्धि, राष्ट्रीय इस्पात नीति और उत्पादन से संबद्ध प्रोत्साहन (PLI) योजना द्वारा संचालित होती है। **स्टील स्क्रैप रीसाइक्लिंग नीति** कुशल पुनर्चक्रण को बढ़ावा देती है और उच्च गुणवत्ता वाले स्क्रैप की उपलब्धता सुनिश्चित करती है, **हरित इस्पात (ग्रीन स्टील)** को अपनाने की दिशा में बहुत महत्वपूर्ण है।
- **रसायन और पेट्रो-रसायन क्षेत्रक:** भारत एक निवल आयातक है, जो पेट्रोकेमिकल मध्यवर्ती वस्तुओं के **लगभग 45%** के लिए आयात पर निर्भर है।
- **पूंजीगत वस्तुएं:** प्रौद्योगिकी अंतराल के कारण, यह क्षेत्रक विनिर्माण के लिए उन्नत मशीनों का आयात करता है।
  - सरकार **स्मार्ट मैन्युफैक्चरिंग और इंडस्ट्री 4.0** को बढ़ावा दे रही है। साथ ही, विभिन्न संस्थानों में **स्मार्ट एडवांस्ड मैन्युफैक्चरिंग एंड रैपिड ट्रांसफॉर्मेशन हब (SAMARTH/ समर्थ) उद्योग केंद्रों** की स्थापना में मदद कर रही है।
- **ऑटोमोबाइल उद्योग:** भारतीय ऑटोमोबाइल उद्योग **आर्थिक संवृद्धि का एक महत्वपूर्ण कारक** है। वित्त वर्ष 2024 में इस उद्योग द्वारा **ऑटोमोबाइल की घरेलू बिक्री में 12.5 प्रतिशत की वृद्धि** दर्ज की गई थी। इस क्षेत्रक की क्षमता को पहचानते हुए, सरकार ने इस क्षेत्रक हेतु **PLI योजना को एक और वर्ष के लिए बढ़ा** दिया है।

© Vision IAS

- **इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग:** भारत ने स्मार्टफोन आयात पर अपनी निर्भरता को काफी हद तक कम कर दिया है, अब 99 प्रतिशत स्मार्टफोन का निर्माण घरेलू स्तर पर किया जाता है।
    - मेक इन इंडिया और डिजिटल इंडिया जैसे कार्यक्रमों के साथ-साथ बेहतर बुनियादी ढांचे एवं विभिन्न प्रोत्साहनों ने घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा दिया है। साथ ही, विदेशी निवेश आकर्षित किया है।
    - हालांकि, भारत का इलेक्ट्रॉनिक्स बाजार वैश्विक बाजार का **केवल 4 प्रतिशत** ही है। इस उद्योग ने बड़े पैमाने पर असेंबलिंग पर ध्यान केंद्रित किया है, जबकि डिजाइन और घटक विनिर्माण में सीमित प्रगति हुई है।

चार्ट VII.12 : भारत में अनुसंधान एवं विकास व्यय में तेजी की आवश्यकता

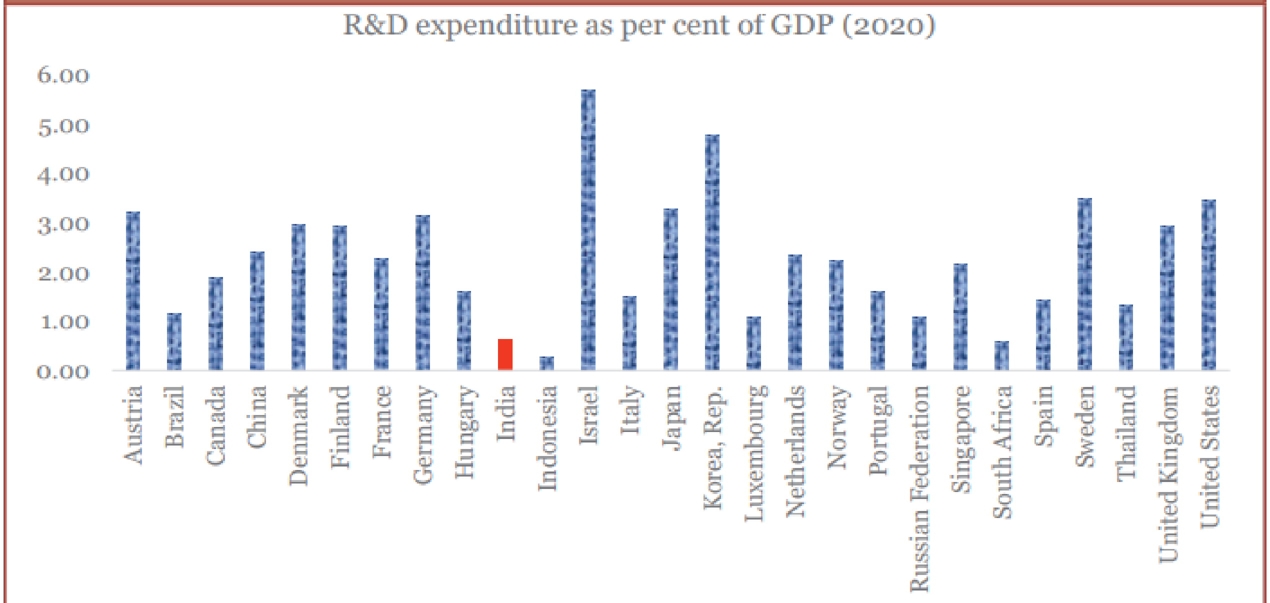

स्रोत: विश्व बैंक

- **वस्त्र:** वस्त्र उद्योग एक प्रमुख **रोजगार सृजनकर्ता** उद्योग है और भारत के सकल मूल्य वर्धन (GVA) विनिर्माण में इसकी हिस्सेदारी लगभग **11 प्रतिशत** है। भारत जूट का एक प्रमुख उत्पादक है और कपास, रेशम एवं मानव निर्मित फाइबर उत्पादन में विश्व स्तर पर **दूसरे स्थान** पर है। भारत वस्त्र एवं परिधान का **छठा सबसे बड़ा निर्यातक** है और इस क्षेत्रक में वैश्विक व्यापार में इसकी लगभग **4 प्रतिशत** हिस्सेदारी है। तकनीकी वस्त्रों में भारत विश्व स्तर पर **5वें स्थान** पर है, जो महत्वपूर्ण विकास संभावनाएं प्रदान करता है।
    - **चुनौतियां:**
        - इस उद्योग में MSME क्षेत्रक का प्रभुत्व **विस्तार और दक्षता को सीमित** करता है;
        - इसकी खंडित प्रकृति लॉजिस्टिक संबंधी लागत को बढ़ाती है।
        - कपास पर भारत की निर्भरता इस उद्योग की प्रतिस्पर्धात्मकता को सीमित करती है;
        - इस उद्योग ने सीमित विदेशी प्रत्यक्ष निवेश को आकर्षित किया है;
        - तकनीकी प्रगति की कमी है और आयातित वस्त्र मशीनरी पर बहुत अधिक निर्भरता है;
        - महत्वपूर्ण रूप से कौशल की कमी बनी हुई है, जिससे उत्पादकता और नवाचार में बाधा आ रही है आदि।
- **फार्मास्यूटिकल्स:** भारत का फार्मास्युटिकल उद्योग मात्रा के हिसाब से दुनिया का **तीसरा सबसे बड़ा** उद्योग है, जो पिछले पांच वर्षों में औसतन **10.1 प्रतिशत की दर से बढ़ा** है।
    - सरकार ने इस क्षेत्रक की मदद करने के लिए **PLI योजना और स्ट्रेंथनिंग ऑफ फार्मास्युटिकल्स इंडस्ट्री (SPI)** जैसे कदम उठाए हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना और आयात पर निर्भरता को कम करना है।

- भारत अपनी पहली स्वदेशी रूप से विकसित **CAR-T सेल थेरेपी** की स्वीकृति के साथ **सेल और जीन थेरेपी** में प्रगति कर रहा है। नई दवाओं तक पहुंच में तेजी लाने के लिए, केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन अब संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, जापान, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और यूरोपीय संघ में स्वीकृत दवाओं के लिए स्थानीय परीक्षणों से छूट की अनुमति दे रहा है।

- **सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSME):** यह क्षेत्रक भारत की अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है, जो कम पूंजी लागत पर बड़ी संख्या में रोजगार पैदा करता है।
  - **प्रमुख योजनाएं:** आत्मनिर्भर भारत कोष; MSME-क्लस्टर विकास कार्यक्रम; ऋण तक पहुंच में सुधार के लिए क्रेडिट गारंटी योजना; विलंबित भुगतान के समाधान के लिए सूक्ष्म और लघु उद्यम सुविधा परिषद; MSME की समस्याओं के समाधान के लिए MSME समाधान और चैंपियंस पोर्टल आदि।

औद्योगिक उत्पादन में राज्य-वार पैटर्न

- **गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक और तमिलनाडु** का भारत के औद्योगिक मूल्य में संयुक्त रूप से लगभग **43%** की हिस्सेदारी है। इसके विपरीत, **पूर्वोत्तर राज्यों** की केवल **0.7% हिस्सेदारी** है।

निष्कर्ष

विनिर्माण क्षेत्रक में महाशक्ति बनने के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भारत को सरकार के सभी स्तरों, निजी क्षेत्रक, कौशल विकास प्रणालियों, शिक्षाविदों, अनुसंधान संस्थानों और वित्तीय हितधारकों के समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है।

एक-पंक्ति में सारांश

भारत का औद्योगिक क्षेत्रक PLI योजनाओं, व्यवसाय करने में सुगमता में सुधारों और MSME समर्थन के माध्यम से तेजी से विस्तार कर रहा है, हालांकि, वैश्विक व्यापार चुनौतियां, उच्च लॉजिस्टिक्स लागत और कौशल अंतराल को ध्यान में रखते हुए अतिरिक्त नीतिगत कार्रवाई की आवश्यकता है।

UPSC के लिए प्रासंगिकता

- *औद्योगिक विकास और विनिर्माण नीतियां (GS-3: भारतीय अर्थव्यवस्था, मेक इन इंडिया)*
- *व्यवसाय करने में सुगमता और व्यापार सुधार (GS-3: MSME क्षेत्रक, आर्थिक विकास)*
- *व्यापार और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला परिवर्तन (GS-2: अंतर्राष्ट्रीय संबंध, GS-3: निर्यात)*
- *उद्योग में प्रौद्योगिकी और AI (GS-3: डिजिटल अर्थव्यवस्था और भविष्य की प्रौद्योगिकियां)*

अध्याय 8- सेवा: दिग्गजों के समक्ष नई चुनौतियां (Services: New Challenges for the Old War Horse)

परिचय

- **सेवा क्षेत्रक** का कुल सकल मूल्य वर्धन (GVA) में योगदान **वित्त वर्ष 2014 के 50.6% से बढ़कर वित्त वर्ष 2025 में 55.3%** (प्रथम अग्रिम अनुमान) हो गया है।
- भारत वैश्विक सेवाओं के कुल निर्यात में **4.3% हिस्सेदारी (2023) के साथ विश्व में 7वें स्थान पर है।**
- सेवा क्षेत्रक लगभग **30% कार्यबल** को रोजगार भी प्रदान करता है।

भारत में सेवा क्षेत्रक का प्रदर्शन

- सेवाएं अप्रत्यक्ष रूप से GDP में भी योगदान देती हैं, जिसे विनिर्माण क्षेत्रक की सेवाकरण प्रक्रिया कहा जाता है; अर्थात, उत्पादन और उत्पादन के बाद मूल्य संवर्धन में सेवाओं का बढ़ता उपयोग।
- **सेवा क्षेत्रक में शामिल हैं:** व्यापार, मरम्मत कार्य, होटल और रेस्तरां, परिवहन, भंडारण, संचार एवं प्रसारण, वित्तीय सेवाएं, रियल एस्टेट आदि।

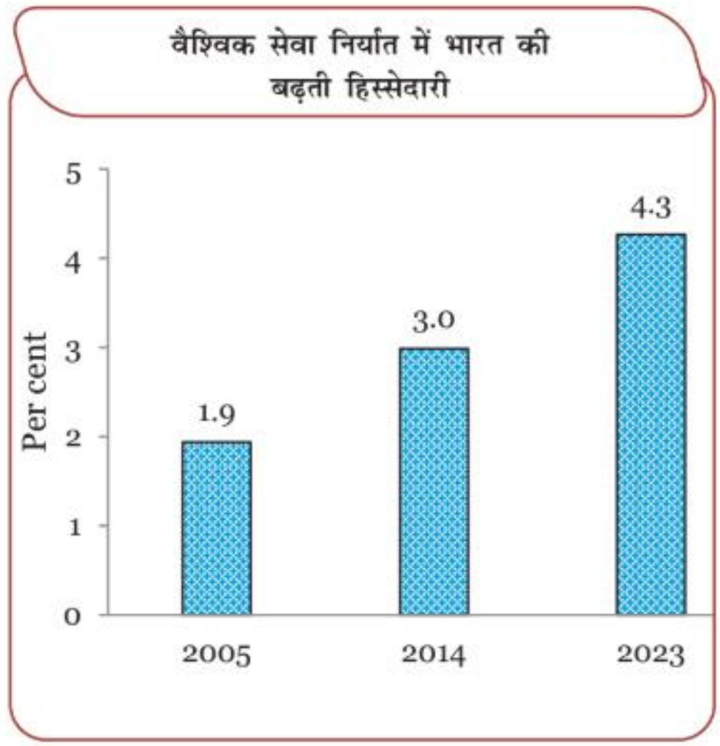

सेवा व्यापार

- कंप्यूटर सेवाएं और व्यापार सेवाएं भारत के सेवा निर्यात में लगभग **70% का योगदान** देती हैं।
- वित्त वर्ष 2025 में **सेवा निर्यात में वृद्धि के मामले में भारत शीर्ष पांच प्रमुख देशों में शामिल** है।

लॉजिस्टिक्स और भौतिक कनेक्टिविटी-आधारित सेवाओं में प्रगति

- **रेलवे:** भारतीय रेलवे विश्व का **चौथा सबसे बड़ा नेटवर्क** है। वित्त वर्ष 2024 में यात्री यातायात में **8% की वृद्धि** दर्ज की गई थी। वित्त वर्ष 2024 में राजस्व अर्जित करने वाली माल ढुलाई में **5.2% की वृद्धि** हुई थी।
- **सड़क परिवहन:** यह परिवहन सेवाओं के कुल GVA में 78% (सर्वाधिक) का योगदान करता है।
- **विमानन:** भारत वैश्विक स्तर पर **सबसे तेजी से बढ़ने वाला विमानन बाजार** है।
- **पत्तन, जलमार्ग और पोत परिवहन:** भारत ने **मैरीटाइम इंडिया विज़न 2030 और मैरीटाइम अमृतकाल विज़न 2047** के जरिए **2047 तक जहाज निर्माण एवं जहाज मरम्मत** को विश्व के **शीर्ष 5 देशों में शामिल** करने का लक्ष्य रखा है।
    - **अंतर्देशीय जल परिवहन:** भारत में **14,850 कि.मी. की नौगम्य जलमार्ग क्षमता** है। इसमें से वर्तमान में **26 परिचालित जलमार्ग लगभग 4,800 कि.मी. से अधिक क्षेत्र** में फैले हुए हैं।
- **पर्यटन और आतिथ्य क्षेत्रक:** पर्यटन क्षेत्रक का GDP में योगदान **वित्त वर्ष 2023 के 5%** तक पहुंचकर फिर से महामारी-पूर्व स्तर पर आ गया है और इससे **7.6 करोड़ नौकरियां** सृजित हुई हैं।
    - भारत ने 2023 में विश्व पर्यटन प्राप्तियों में **1.8% हिस्सेदारी** अर्जित की और **वैश्विक पर्यटन प्राप्तियों में 14वां स्थान** प्राप्त किया।
- **रियल एस्टेट: रियल एस्टेट विनियामक प्राधिकरण (RERA)** के प्रवर्तन के बाद, भारत **वैश्विक रियल एस्टेट पारदर्शिता सूचकांक (2024) में 89 देशों में 31वें स्थान** पर पहुंच गया है।

- **सूचना प्रौद्योगिकी (IT) सेवाएं:** सूचना एवं कंप्यूटर-संबंधी सेवाएं **वित्त वर्ष 2013–वित्त वर्ष 2023 के दौरान 12.8% की प्रवृत्ति दर** से बढ़ी थीं। इससे इसका **कुल GVA में योगदान 6.3% से बढ़कर 10.9%** हो गया है।
- **वैश्विक क्षमता केंद्र (GCCs):** GCCs भारत के कॉर्पोरेट परिदृश्य को रूपांतरित करने वाले **रणनीतिक केंद्र** बन रहे हैं और उनकी संख्या **वित्त वर्ष 2024 में 1,700 से अधिक** हो गई है।
- **दूरसंचार:** भारत **विश्व का दूसरा सबसे बड़ा दूरसंचार बाजार** है, भारत में कुल **टेली-घनत्व 84%** है।
  - भारत **विश्व में सबसे सस्ती दर पर डेटा** प्रदान करता है और **सबसे तेज़ गति से 5G सेवाएं शुरू** की हैं।

चार्ट VIII.9: कार्यनीतिक सिफारिशों का सारांश

स्रोत: पंत. एस, शर्मा. पी, गुप्ता. ए और अग्रवाल पी. (2024, दिसंबर)। संभावित सेवा उप-क्षेत्रों की पहचान: जीवीए, निर्यात और रोजगार डेटा से अंतर्दृष्टि। [वर्किंग पेपर] नीति आयोग. https://tinyurl.com/vxbbs5vj

सेवा क्षेत्रक का राज्यवार प्रदर्शन:

- वित्त वर्ष 2025 में **सेवा क्षेत्रक** का योगदान राष्ट्रीय GVA में लगभग **55%** है, हालांकि राज्यों के अनुसार इसमें भिन्नता देखी जाती है।
- **वित्त वर्ष 2023 में, कर्नाटक और महाराष्ट्र** ने भारत के कुल सेवा क्षेत्रक के सकल राज्य मूल्यवर्धन (GSVA) में **>25%** योगदान दिया था, जबकि **19 राज्यों** का संयुक्त योगदान मात्र **25%** रहा।

निष्कर्ष:

- AI के युग में कुशल डिजिटल और तकनीकी कार्यबल वाली अर्थव्यवस्थाएं विस्तारित होंगी। इससे कार्यबल कौशल विकास अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाएगा।
- निर्माण और सेवाओं का समर्थन करने के लिए जटिल प्रक्रियाओं एवं विनियमों को सरल बनाना आवश्यक है। इससे भारत वैश्विक चुनौतियों के खिलाफ अधिक प्रतिरोधक बन सकेगा।

एक-पंक्ति में सारांश

भारत का सेवा क्षेत्रक संवृद्धि का प्रमुख चालक बना हुआ है, लेकिन AI जैसे व्यवधान, विनियामक बाधाएं और वैश्विक व्यापार में आने वाले बदलावों के कारण निरंतर विस्तार के लिए रणनीतिक नीतिगत हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

 © Vision IAS

UPSC के लिए प्रासंगिकता

- *भारत की आर्थिक संवृद्धि में सेवाओं की भूमिका (GS-3: अर्थव्यवस्था, सेवा क्षेत्रक में सुधार)*
- *IT और डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन (GS-3: डिजिटल अर्थव्यवस्था, AI और स्वचालन संबंधी चुनौतियां)*
- *लॉजिस्टिक और अवसंरचना का विस्तार (GS-3: उद्योग, शहरी विकास)*
- *पर्यटन और आतिथ्य विकास (GS-1: संस्कृति, GS-3: आर्थिक विकास)*

अध्याय 9: कृषि और खाद्य प्रबंधन: भविष्य का क्षेत्र (Agriculture and food management: Sector of the future)

परिचय

- 'कृषि और संबद्ध गतिविधियां' क्षेत्रक ने चालू मूल्यों पर वित्त वर्ष 2024 के लिए देश के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग **16% का योगदान** दिया है और यह लगभग **46.1% आबादी** का समर्थन करता है।
- **बागवानी, पशुधन और मत्स्य पालन** जैसे हाई वैल्यू वाले क्षेत्रक समग्र कृषि विकास के प्रमुख चालक बन गए हैं।
- भारत विश्व का **11.6% खाद्यान्न** उत्पादित करता है, लेकिन इसकी **फसल पैदावार** अन्य शीर्ष उत्पादकों देशों की तुलना में **बहुत कम है।**
- **वित्त वर्ष 2024-25 के लिए अरहर और बाजरा** के न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) में उत्पादन की भारित औसत लागत पर क्रमशः **59% एवं 77% की वृद्धि** की गई है।

चार्ट IX.8: सिंचाई के स्रोत

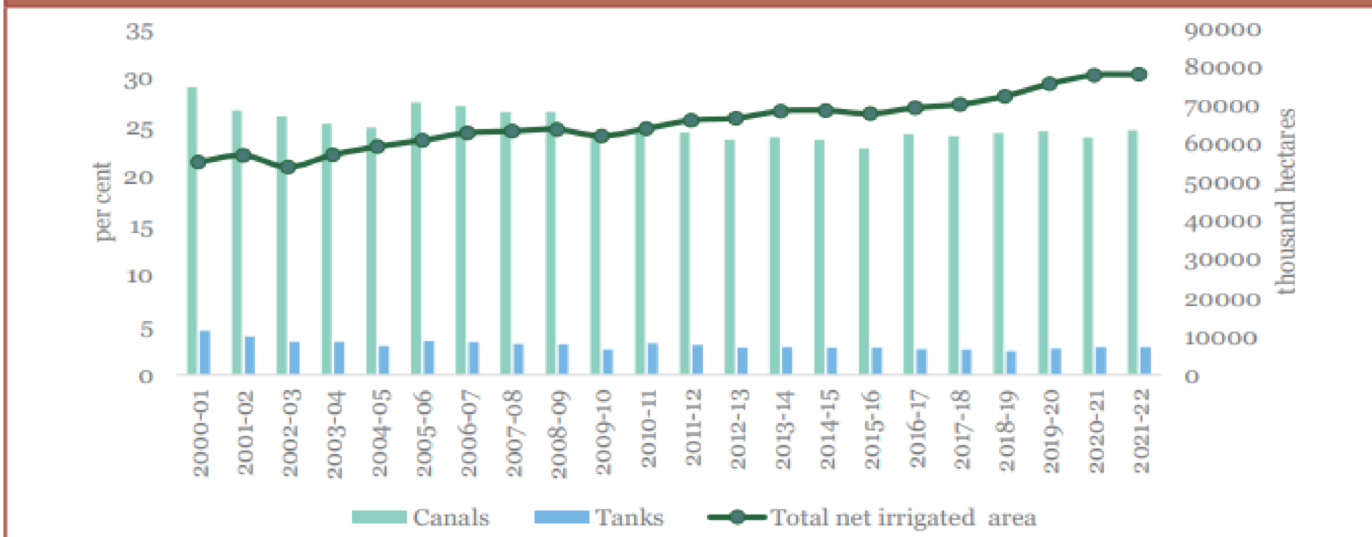

स्रोत: कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय

बीज-गुणवत्ता और उर्वरकों का उपयोग: महत्वपूर्ण विभेदक

- 2023-24 फसली मौसम में, ICAR ने **81 फसलों के लिए 1,798 किस्मों में 1.06 लाख क्विंटल ब्रीडर सीड्स** का उत्पादन किया है।
- प्रमुख हस्तक्षेपों में **बीज बैंक, 'यूरिया गोल्ड'** (पोषक तत्वों के अवशोषण को बढ़ाने के लिए यूरिया को सल्फर के साथ मिलाया जाता है), **पीएम प्रणाम** पहल शामिल हैं।

वर्षा और सिंचाई प्रणाली: दक्षता निर्माण एवं कवरेज का विस्तार

- कृषि क्षेत्रक मौसम परिवर्तन के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है, यहां कुल बोए गए क्षेत्र का केवल **55% ही सिंचित** है।
- इसके अलावा भारत की **दो तिहाई कृषि भूमि सूखे के खतरे का सामना** कर रही है।
- इस पहलू में प्रमुख हस्तक्षेपों में **प्रधान मंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत प्रति बूंद अधिक फसल** (PDMC) **प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना** (PMKSY), **सूक्ष्म सिंचाई निधि** (MIF), **वर्षा आधारित क्षेत्र विकास** (RAD) आदि शामिल हैं।

कृषि ऋण: एक महत्वपूर्ण इनपुट

- भारत में **7.75 करोड़ किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) खाते** क्रियाशील हैं।
- मत्स्य पालन और पशुपालन की कार्यशील पूंजी आवश्यकताओं का समर्थन करने के लिए 2018-19 में KCC का विस्तार किया गया था।

© Vision IAS

- इस क्षेत्रक में प्रमुख हस्तक्षेपों में **संशोधित ब्याज अनुदान योजना** (MISS), **शीघ्र पुनर्भुगतान प्रोत्साहन** (Prompt Repayment Incentive: PRI), **प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना** (PMFBY), **पीएम किसान** आदि शामिल हैं।

कृषि मशीनीकरण: पहुंच को सुगम बनाना

- मशीनरी की उच्च लागत लघु और सीमांत किसानों के बीच कृषि मशीनीकरण को बढ़ावा देने में एक गंभीर बाधा प्रस्तुत करती है।
- इस संबंध में प्रमुख हस्तक्षेपों में **कृषि मशीनीकरण पर उप-मिशन (Sub-Mission on Agricultural Mechanisation: SMAM)** शामिल है, जो **कस्टम हायरिंग सेंटर्स (CHCs)** स्थापित करने में मदद करता है। **कृषि मशीनरी बैंक** सस्ती दरों पर मशीनरी किराए पर लेने में सक्षम बनाता है और महिला स्वयं सहायता समूहों (SHGs) को ड्रोन भी प्रदान किए गए हैं।

गैर-संस्थागत ऋण की हिस्सेदारी में गिरावट

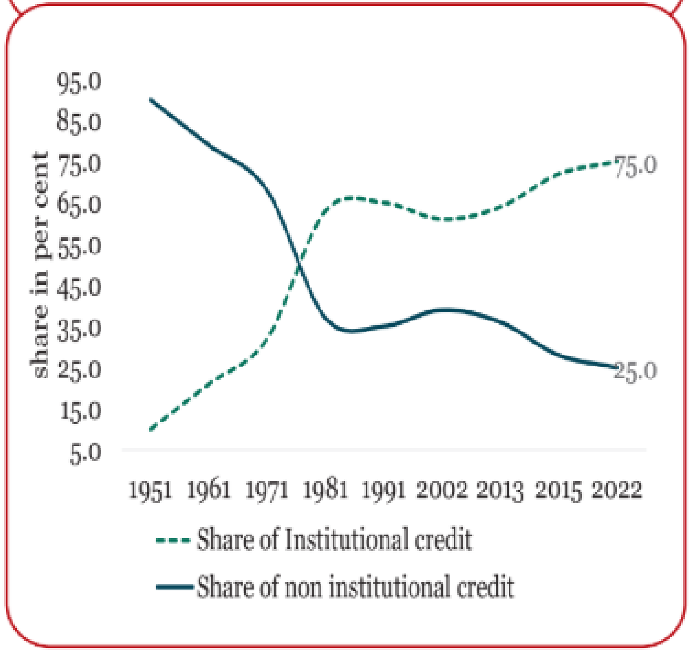

कृषि विस्तार (Agriculture extension): एक सक्षमकर्ता

- ज्ञान के प्रसार, उत्पादकता बढ़ाने और संधारणीय कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने में कृषि विस्तार महत्वपूर्ण है।
- **प्रमुख हस्तक्षेप:** इसमें कृषि विस्तार सेवाओं को बढ़ावा देने, उद्यमशीलता को बढ़ाने और उत्पादकता में सुधार लाने के लिए **कृषि विस्तार उप-मिशन (Sub-Mission on Agricultural Extension (SMAE)** शामिल है।

कृषि विपणन अवसंरचना में सुधार

- इसके तहत प्रमुख हस्तक्षेपों में **कृषि विपणन अवसंरचना** (AMI)[8] उप-योजना, **कृषि अवसंरचना कोष (AIF)**[9], **e-NAM योजना** आदि शामिल हैं।

संधारणीय खेती को प्रोत्साहन देना: प्रमुख उपाय

कृषि में जलवायु संबंधी कार्रवाई

- अध्ययनों से संकेत मिला है कि **2099 तक वार्षिक तापमान में 2°C** की संभावित वृद्धि तथा वार्षिक वर्षा में **7% की वृद्धि से भारतीय कृषि उत्पादकता में 8-12% की गिरावट** आ सकती है।
- **प्रमुख हस्तक्षेप:** राष्ट्रीय संधारणीय कृषि मिशन, परम्परागत कृषि विकास योजना (PKVY), पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए मिशन जैविक मूल्य श्रृंखला विकास (MOVCDNER) आदि।

संबद्ध क्षेत्रक: रेसिलिएंस का निर्माण करने की क्षमता

- मत्स्य पालन क्षेत्रक में **8.7% की उच्चतम चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR)** हुई है। इसके बाद पशुधन क्षेत्रक में **8% की CAGR वृद्धि** देखने को मिली है।
- **प्रमुख हस्तक्षेप: राष्ट्रीय गोकुल मिशन, पशुधन स्वास्थ्य एवं रोग नियंत्रण कार्यक्रम, प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना** (PMMSY), **मत्स्य पालन और जलकृषि अवसंरचना विकास निधि** (Fisheries and Aquaculture Infrastructure Development Fund: FIDF)।

[8] Agriculture Marketing Infrastructure

[9] Agriculture Infrastructure Fund

चार्ट IX.19: दुग्ध, मांस, अंडे और मछली के उत्पादन में वृद्धि

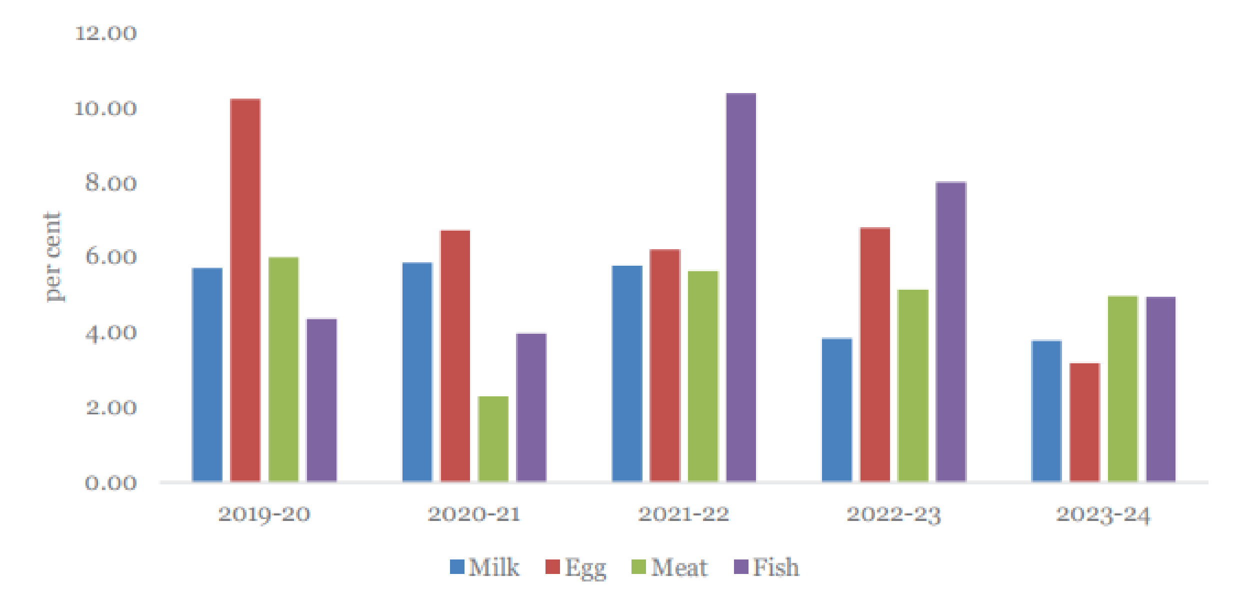

स्रोत: पशुपालन एवं डेयरी विभाग तथा मत्स्यपालन विभाग

सहकारी समितियां: बेहतर सेवा देने के लिए संस्था को मजबूत बनाना

- ये **कृषि, ऋण व बैंकिंग, आवास और महिला कल्याण** सहित कई क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
- **प्रमुख हस्तक्षेप:** इनमें प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (PACS) के लिए विशेष रूप से मॉडल उप-नियम (Model Bye-Laws), PACS को **सामान्य सेवा केंद्रों (CSC) में तब्दील करना,** खुदरा पेट्रोल और डीजल दुकानों की स्थापना तथा सहकारी समितियों के भीतर माइक्रो-ATM की स्थापना करना शामिल है।

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग: अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण

- यह संगठित क्षेत्रक में **कुल रोजगार का 12.41%** प्रदान करता है।
- वित्त वर्ष 2024 में **कृषि-खाद्य निर्यात भारत के कुल निर्यात का लगभग 11.7% था।**
- कृषि-खाद्य निर्यात में **प्रसंस्कृत खाद्य निर्यात** का हिस्सा वित्त वर्ष 2018 के 14.9% से बढ़कर वित्त वर्ष 2024 में **23.4%** हो गया है।
- **प्रमुख हस्तक्षेप:** प्रधान मंत्री किसान संपदा योजना (PMKSY), खाद्य प्रसंस्करण के लिए उत्पादन से संबद्ध प्रोत्साहन योजना (PLISFPI), प्रधान मंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम औपचारीकरण (PMFME) योजना।

खाद्य प्रबंधन: खाद्य सुरक्षा को सक्षम बनाना

- **प्रमुख हस्तक्षेप:** राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (NFSA); प्रधान मंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना; किसानों के लिए फसल की कटाई के बाद ऋण की सुविधा हेतु इलेक्ट्रॉनिक-नेगोशिएबल वेयरहाउस रिसिप्ट (e-NWR)-बेस्ड प्लेज फाइनेंसिंग (CGS-NPF) के लिए ऋण गारंटी योजना आदि।

निष्कर्ष

भारत का कृषि क्षेत्रक आर्थिक संवृद्धि और खाद्य सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। चुनौतियों के बावजूद, सरकारी पहलों के समर्थन द्वारा इसने संतुलित विकास के साथ रेसिलिएंस दिखाया है। इससे उत्पादकता बढ़ाने, फसलों में विविधता लाने और किसानों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने में मदद मिली है।

एक-पंक्ति में सारांश

भारत का कृषि क्षेत्रक उत्पादकता संबंधी सुधारों, डिजिटल नवाचारों और क्लाइमेट रेजिलिएंस के माध्यम से रूपांतरित हो रहा है, लेकिन बाजार पहुंच, वित्तीय सहायता तथा संधारणीयता संबंधी चुनौतियां बनी हुई हैं।

UPSC के लिए प्रासंगिकता

- *कृषि विकास एवं चुनौतियां (GS-3: भारतीय अर्थव्यवस्था, कृषि सुधार)*
- *खाद्य सुरक्षा और सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) (GS--2: गवर्नेंस, GS-3: अर्थव्यवस्था)*
- *क्लाइमेट रेजिलिएंट कृषि और जल प्रबंधन (GS--3: पर्यावरण और कृषि)*
- *खेती में प्रौद्योगिकी का उपयोग (GS--3: डिजिटल अर्थव्यवस्था, परिशुद्धता कृषि)*

अध्याय 10: जलवायु और पर्यावरण: अनुकूलन की अनिवार्यता (Climate and Environment: Adaptation Matters)

परिचय

- **भारत का प्रति व्यक्ति कार्बन उत्सर्जन वैश्विक औसत का एक तिहाई है**, जबकि यह विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है।
- **भारतीय वन सर्वेक्षण 2024 के** अनुसार 2005 और 2021 के बीच 2.29 बिलियन टन CO_2 के बराबर का अतिरिक्त कार्बन सिंक निर्मित किया गया है।

निधियों के अंतर्राष्ट्रीय प्रवाह में शमन पूर्वाग्रह

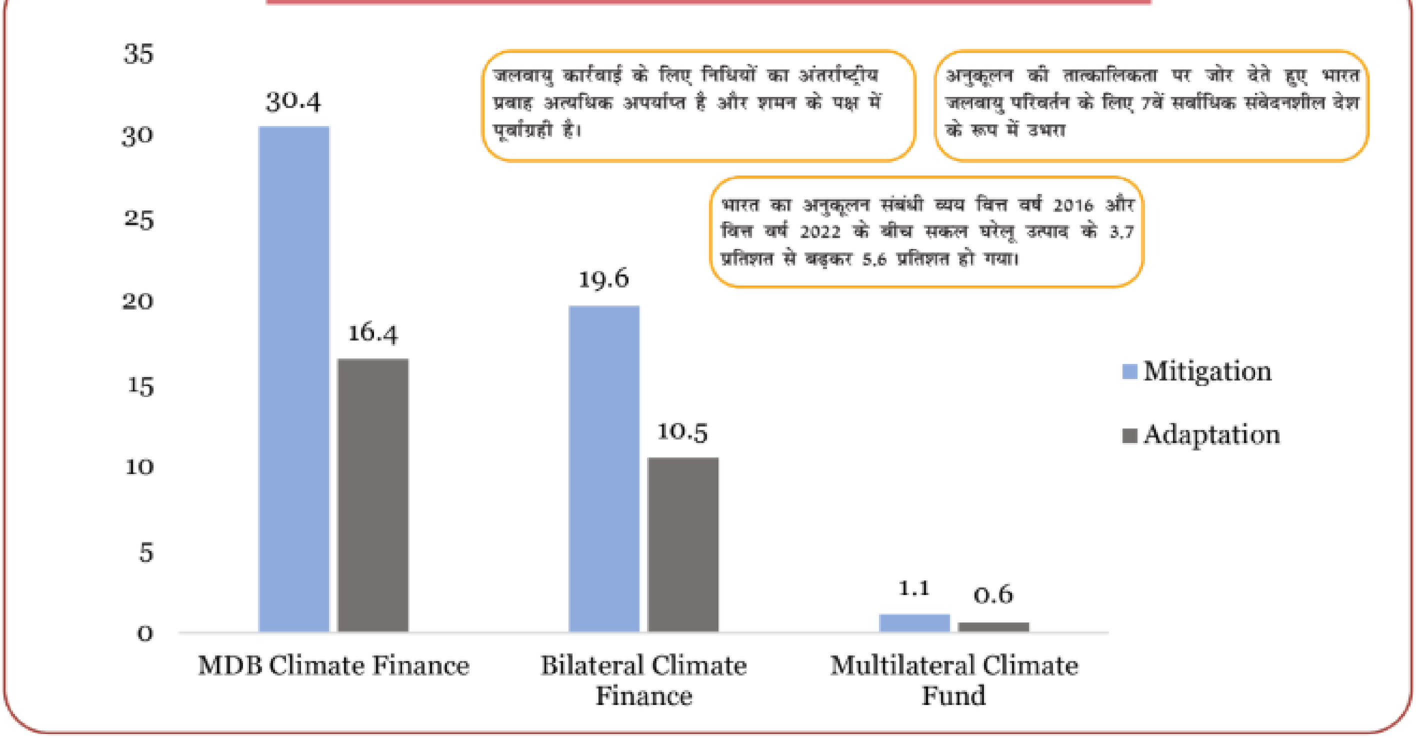

अनुकूलन को सबसे आगे लाना

- जलवायु परिवर्तन के प्रति भारत **7 वां सबसे सुभेद्य देश है।**
- भारत का **अनुकूलन हेतु व्यय** वित्त वर्ष 2016 में सकल घरेलू उत्पाद के **3.7%** से बढ़कर वित्त वर्ष 2022 में **5.6% हो गया है**। इसका वित्त-पोषण बड़े पैमाने पर **घरेलू संसाधनों द्वारा किया गया है,** जिसमें सार्वजनिक क्षेत्रक अग्रणी रहा है।
- हालांकि, **अंतर्राष्ट्रीय जलवायु वित्त-पोषण** अपर्याप्त है और अनुकूलन की तुलना में शमन पर अधिक केंद्रित है।
- पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEF&CC) **राष्ट्रीय अनुकूलन योजना (NAP)**[10] **विकसित कर रहा है,** जो भारत की अनुकूलन संबंधी प्राथमिकताओं को रेखांकित करने वाला एक प्रमुख दस्तावेज है।

[10] National Adaptation Plan

© Vision IAS

भारत की एनडीसी की ओर प्रगति

नवीकरणीय ऊर्जा

वर्ष 2030 तक 50 प्रतिशत के अद्यतन एनडीसी लक्ष्य की तुलना में, गैर-जीवाश्म ईंधन स्रोतों से स्थापित बिजली उत्पादन क्षमता 30 नवंबर, 2024 तक 46.8 प्रतिशत तक पहुंच गई है।

वन क्षेत्र

भारत के नवीनतम वन सर्वेक्षण 2024 के अनुसार, वर्ष 2030 तक 2.5 से 3 बिलियन टन सीओ2 के समतुल्य का अतिरिक्त कार्बन सिंक बनाने के एनडीसी लक्ष्य के मुकाबले वर्ष 2005 और वर्ष 2023 के बीच 2.29 बिलियन टन सीओ2 के समत.ुल्य का अतिरिक्त कार्बन सिंक बनाया गया है।

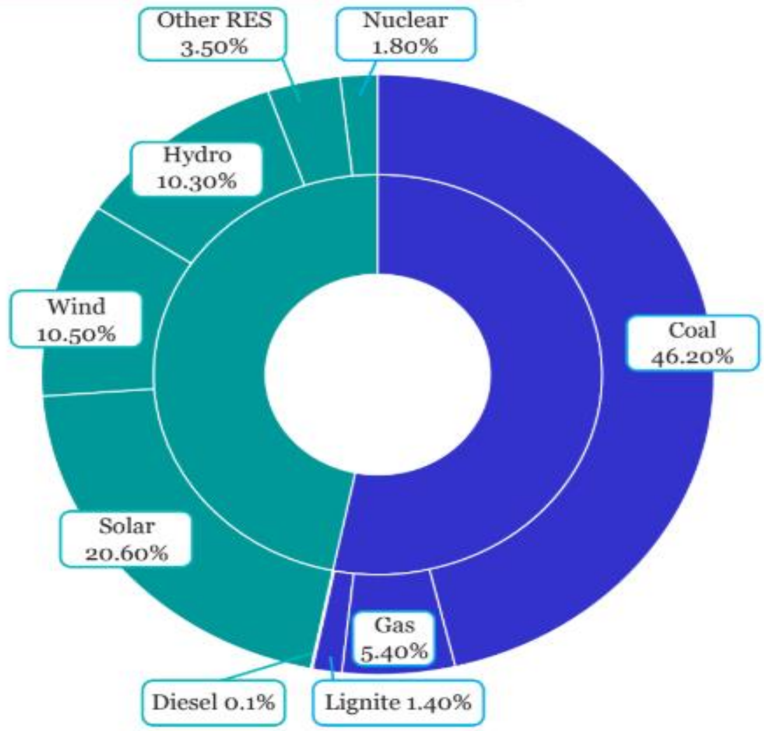

विभिन्न क्षेत्रकों में रेसिलिएंस के लिए शुरू की गई अन्य पहलें

- **कृषि में अनुकूलन:** इसमें जलवायु-अनुकूल बीजों के अनुसंधान और विकास पर अधिक ध्यान देना, भूजल संसाधनों को संरक्षित और संवर्धित करने के उपाय, मृदा स्वास्थ्य में सुधार और फसल पद्धतियों में संशोधन करना शामिल है।
- **शहरी क्षेत्रों में रेसिलिएंस का निर्माण करना:** जैसे-जैसे शहरीकरण और जलवायु परिवर्तन बढ़ रहे हैं, शहरों में गर्मी के दबाव, शहरी बाढ़ और घटते भूजल स्तर से निपटने पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है।
  - **प्रमुख हस्तक्षेप:** राष्ट्रीय संधारणीय आवास मिशन (NMSH)[11], अमृत/AMRUT, स्मार्ट सिटी मिशन, शहरी नदी प्रबंधन योजना, नदीय शहर गठबंधन (RCA)[12]।
- **तटीय क्षेत्रों में अनुकूलन:** भारत की लंबी तटरेखा अत्यधिक वर्षा, भयंकर तूफान, उच्च ज्वार जनित बाढ़ आदि जैसी चरम जलवायु घटनाओं का सामना करती है।
  - **प्रमुख हस्तक्षेप:** 'मेंग्रोव इनिशिएटिव फॉर शोरलाइन हैबिटैट्स एंड टेंजिबल इनकंस **(मिष्टी/ MISHTI)**, **मैंग्रोव और प्रवाल भित्तियों का संरक्षण और प्रबंधन** योजना, **तटीय विनियमन क्षेत्र (Coastal Regulation Zones)।**
- **जल प्रबंधन के लिए अनुकूलन कार्रवाई:** जल शक्ति अभियान, राष्ट्रीय जलभृत मानचित्रण परियोजना (NAQUIM)[13], भू-नीर पोर्टल, द फ्लड वॉच इंडिया ऐप।

एनर्जी-ट्रांजिशन विकसित देशों के अनुभव से सीखना और विकल्पों पर विचार करना

- **कोयला:** कई विकसित देशों के विपरीत भारत कोयले पर बहुत अधिक निर्भर है। भारत में **कोयले के वैश्विक भंडार का लगभग 10% है,** लेकिन प्राकृतिक गैस भंडार का केवल 0.7% ही है।
- भारत में गैर-जीवाश्म ईंधन स्रोतों से 2,13,701 मेगावाट बिजली उत्पादन होता है, जो कुल बिजली उत्पादन क्षमता का 46.8% है।

[11] National Mission on Sustainable Habitat

[12] River Cities Alliance

[13] National Aquifer Mapping Project

- **एनर्जी ट्रांजिशन को बढ़ावा देने के लिए मौजूदा नीतियों/योजनाओं पर नई पहलें और अपडेट्स:** पी.एम. जनमन और धरती आभा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान (DA JGUA) के तहत नई सौर ऊर्जा योजना (आदिवासी और PVTG बस्तियों/गांवों के लिए); पी.एम. - सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना, अपतटीय पवन ऊर्जा परियोजनाओं के लिए वायबिलिटी गैप फंडिंग (VGF) योजना; हरित ऊर्जा गलियारा (GEC)[14], राष्ट्रीय जैव ऊर्जा कार्यक्रम, पी.एम. कुसुम, राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन।
- **अनुभव से सीख:** विकसित अर्थव्यवस्थाओं के अनुभव से हमें यह सीख मिलती है कि हमें ऊर्जा की निरंतर आपूर्ति के लिए **विश्वसनीय तकनीकी विकल्पों के बिना तापीय ऊर्जा संयत्रों को बंद नहीं करना चाहिए।**
- **हरित निवेश के संबंध में वित्तीय विनियमन का निर्माण:** सेबी (SEBI) ने ESG मापदंडों- बिजनेस रिस्पांसिबिलिटी एंड सस्टेनेबिलिटी रिपोर्ट (BRSR), हरित ऋण प्रतिभूतियां जारी करने, सॉवरेन ग्रीन बॉण्ड (SGrBs) आदि पर रिपोर्टिंग को अनिवार्य कर दिया है।

संधारणीय विकास के लिए जीवनशैली का अनुकूल

- **भारत ने COP26 (2021) में LiFE मिशन शुरू किया** जिसका लक्ष्य पर्यावरण अनुकूल और प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवनशैली को बढ़ावा देना है।
- **एक अनुमान के अनुसार**, हर साल विश्व स्तर पर **17% उपभोक्ता खाद्य पदार्थ बर्बाद होते हैं**, जिससे **8% से अधिक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन** होता है।
- **2030 तक,** LiFE उपायों की वजह से उपभोग कम होने और कीमतें घटने के कारण वैश्विक स्तर पर उपभोक्ताओं को लगभग 440 अरब USD की बचत हो सकती है।
- **प्रमुख हस्तक्षेप:** पी.एम. कुसुम, पी.एम. सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना, इकोमार्क योजना, गो इलेक्ट्रिक' अभियान, परफॉर्म अचीव एंड ट्रेड (PAT) योजना, एक पेड़ मां के नाम, ग्रीन क्रेडिट कार्यक्रम।

चक्रीय अर्थव्यवस्था और संसाधन दक्षता

- संसाधन चक्रीयता से 2030 तक सकल घरेलू उत्पाद में 11% तथा 2050 तक 30% की **बचत हो सकती है।**
- **प्रमुख हस्तक्षेप:** कर लाभ, सब्सिडी, और रीसाइक्लिंग उद्योग के लिए कम ब्याज ऋण, विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व (EPR) ढांचा।
- **प्लास्टिक प्रदूषण** : 2050 तक, प्लास्टिक वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का 15% हिस्सा होगा। **भारत में प्रति व्यक्ति प्लास्टिक खपत दर सबसे कम है** , जो 14 किलोग्राम है, जबकि वैश्विक औसत 35 किलोग्राम है।
- **वायु प्रदूषण:** विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़ों से **पता चलता है कि विश्व की 99% आबादी** सुरक्षित सीमा से अधिक प्रदूषक स्तर वाली हवा में सांस लेती है। निम्न और मध्यम आय वाले देशों में इसका सबसे अधिक जोखिम है।
- **प्रमुख हस्तक्षेप:** राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (NCAP), ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और दिल्ली में **फसल अवशेषों के इन-सीटू प्रबंधन के लिए कृषि मशीनीकरण को बढ़ावा देना।**

निष्कर्ष

भारत का लक्ष्य 2070 तक शुद्ध-शून्य उत्सर्जन हासिल करना है, जो **2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने की उसकी महत्वाकांक्षा के साथ संरेखित है।** इस दृष्टिकोण को प्राप्त करने के लिए ऊर्जा सुरक्षा, रोजगार सृजन, आर्थिक विकास और पर्यावरणीय स्थिरता के साथ निम्न-कार्बन विकास को संतुलित करना आवश्यक है।

एक-पंक्ति में सारांश

भारत की जलवायु नीति अनुकूलन और ऊर्जा सुरक्षा पर केंद्रित है, जो आर्थिक विकास को संधारणीय और चरम मौसमी घटनाओं के प्रति रेसिलिएंस के साथ संतुलित करती है।

[14] Green Energy Corridor

© Vision IAS

UPSC के लिए प्रासंगिकता

- *जलवायु परिवर्तन और भारत की नीतियां (GS-3: पर्यावरण, जलवायु कार्य योजनाएं)*
- *एनर्जी ट्रांजिशन एवं नवीकरणीय ऊर्जा (GS-3: बुनियादी ढांचा, सतत विकास)*
- *शहरी संधारणीयता और प्रदूषण नियंत्रण (GS-3: पर्यावरण, शहरी विकास)*
- *अंतर्राष्ट्रीय जलवायु समझौते (GS-2: अंतर्राष्ट्रीय संबंध, जलवायु वित्त)*

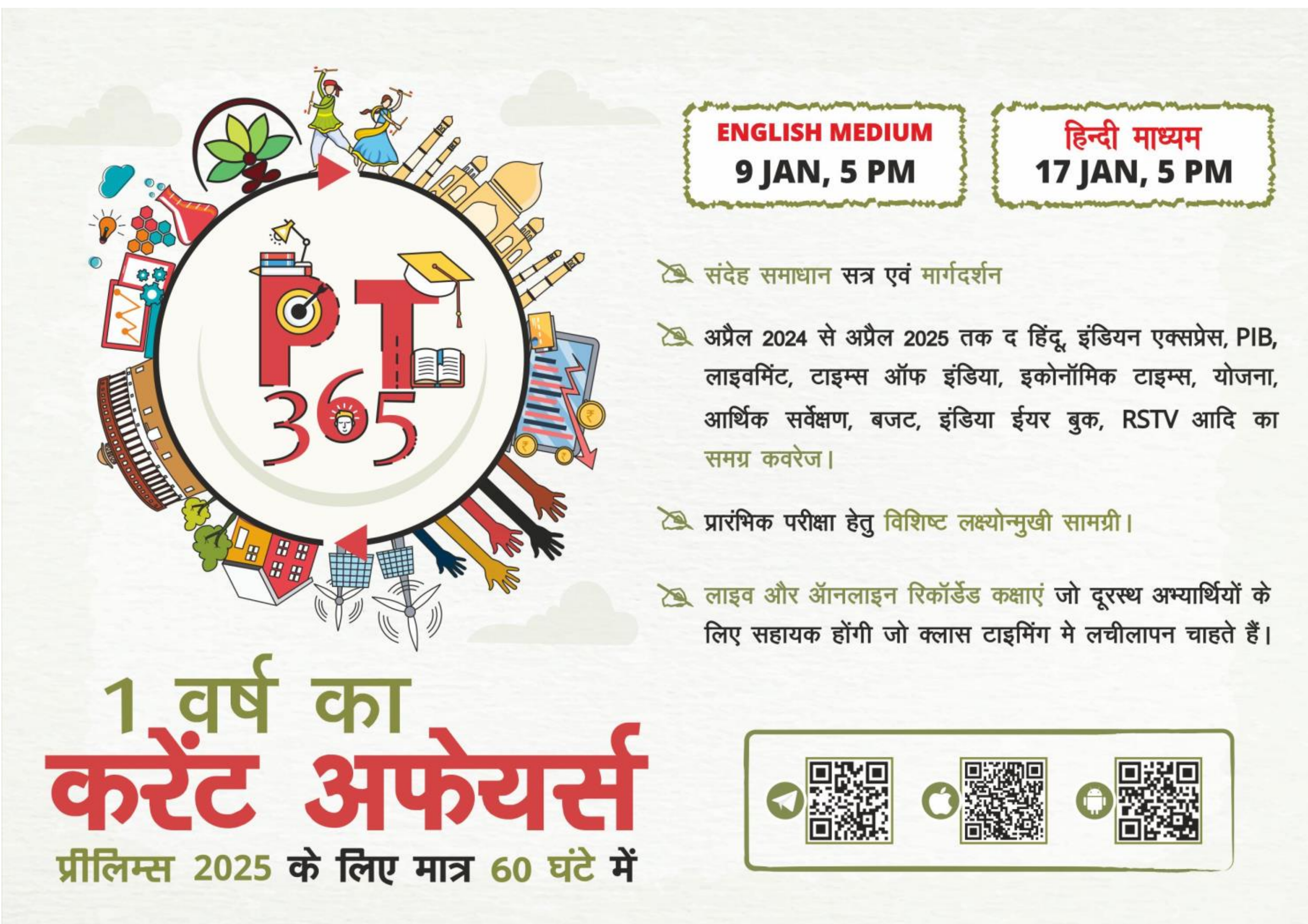

अध्याय 11: सामाजिक क्षेत्र: पहुंच का विस्तार करना और सशक्तीकरण को प्रोत्साहन (Social Sector: Extending reach and driving empowerment)

परिचय

- **आर्थिक और सामाजिक विकास की शुरुआत सतत और समावेशी आर्थिक वृद्धि से** होती है, जो **विकसित भारत 2047** के विजन का केंद्रबिंदु है।
- आर्थिक संवृद्धि को सार्थक विकास में बदलने के लिए **शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा, कौशल विकास के माध्यम से रोजगार के अवसर बढ़ाने आदि पर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है।**

सामाजिक सेवाओं पर व्यय की प्रवृत्तियां

- वित्त वर्ष 2017 से सरकार के **सामाजिक सेवा व्यय (SSE)** में **वृद्धि का रुझान** देखने को मिला है। वित्त वर्ष 21 (कोविड महामारी वर्ष) से वित्त वर्ष 25 (बजट अनुमान) के दौरान सामाजिक सेवा व्यय **15 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR)** से बढ़ा है।
  - शिक्षा क्षेत्रक पर व्यय **12 प्रतिशत की CAGR** से बढ़ा है।
  - **स्वास्थ्य क्षेत्रक** पर व्यय **18 प्रतिशत की CAGR** से बढ़ा है।

चार्ट XI.2: शिक्षा और स्वास्थ्य पर व्यय

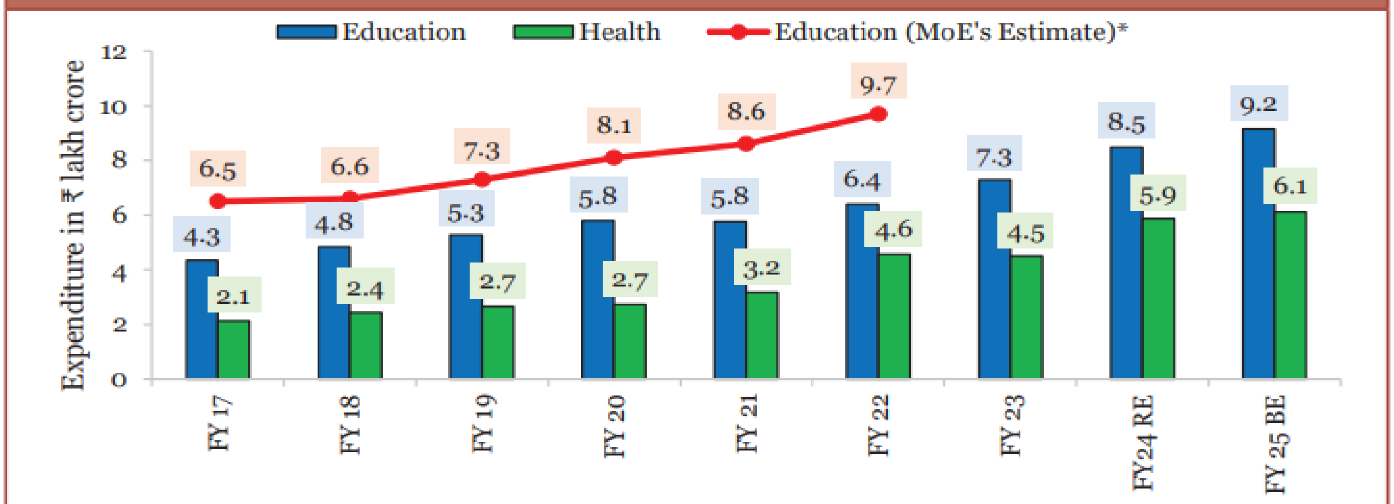

स्रोत: संघ और राज्य सरकारों के बजट दस्तावेज।

परिणाम

- **शहरी-ग्रामीण अंतर: मासिक प्रति व्यक्ति व्यय (MPCE)** अंतर 2011-12 में 84% था, जो 2023-24 में **घटकर 70%** रह गया।
- **असमानता में कमी: गिनी गुणांक में ग्रामीण क्षेत्रों** (2022-23 में 0.266 से घटकर 2023-24 में 0.237 हो गया) और शहरी क्षेत्रों (2022-23 में 0.314 से घटकर 2023-24 में 0.284 हो गया) में **सुधार** हुआ है।

शिक्षा

- **प्रमुख पहलें:** नई शिक्षा नीति (2020), **निष्ठा/NISHTHA** (शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए); डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर फॉर नॉलेज शेयरिंग (**दीक्षा/DIKSHA**), पीएम श्री, पीएम पोषण आदि।
- **प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा:** आधारशिला, नवचेतना, प्रारंभिक बाल्यावस्था अभिप्रेरणा के लिए राष्ट्रीय फ्रेमवर्क।
- **प्रगति:** प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर सकल नामांकन अनुपात (GER) लगभग सार्वभौमिक स्तर (93%) पर पहुंच गया है। स्कूल छोड़ने की दरें लगातार कम हो रही हैं।
  - 18-23 आयु वर्ग के लिए उच्चतर शिक्षा में GER भी 2014-15 के 23.7% से बढ़कर 2021-22 में 28.4% हो गया।

© Vision IAS

- **डिजिटल प्रौद्योगिकी के माध्यम से शिक्षा में भेदभाव या अंतर को कम करना:** स्टडी वेब्स ऑफ एक्टिव लर्निंग फॉर यंग एस्पाइरिंग माइंड्स (SWAYAM/ स्वयं), ई-विद्या (e-VIDYA), कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आदि।

स्वास्थ्य देखभाल

- स्वास्थ्य देखभाल पर सरकारी व्यय **29.0% से बढ़कर 48%** हो गया।
- **बच्चों और किशोरों में बढ़ते मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं और गैर-संचारी रोग (NCDs):** भारत में NCDs के कारण होने वाली मौतों का अनुपात 1990 के 37.9% से बढ़कर 2016 में 61.8% हो गया।
- **प्रगति:** कुल स्वास्थ्य व्यय में जेब से होने वाले खर्च (आउट ऑफ पॉकेट एक्सपेंडिचर) की हिस्सेदारी 62.6% से घटकर 39.4% हो गई है।
- **प्रमुख पहलें:** आयुष्मान भारत प्रधान मंत्री जन आरोग्य योजना (AB PM-JAY), सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) का स्थानीयकरण, जन औषधि योजना आदि।
- **परिवर्तनकारी तकनीक द्वारा समावेशी और समान स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध कराना:** U-WIN, ई-संजीवनी, आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (ABDM), 'i-DRONE' (ICMR का पूर्वोत्तर राज्यों के लिए ड्रोन चिकित्सा आपूर्ति सुविधा और आउटरीच) आदि।

ग्रामीण अवसंरचना

- **सड़कें: प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना (PMGSY)** के तहत 99.6 प्रतिशत लक्षित बस्तियों तक कनेक्टिविटी प्रदान की गई।
  - **प्रधान मंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महा अभियान (PM-JANMAN)** के तहत एक अलग वर्टिकल शुरू किया गया है।
- **आवास: प्रधान मंत्री आवास योजना-ग्रामीण (PMAY-G) के अधीन 2016 से अब तक 2.69 करोड़** घरों का **निर्माण पूरा हो चुका है।**
- **जल निकाय:** मिशन अमृत सरोवर के अधीन 68,843 अमृत सरोवर (तालाब) का निर्माण किया गया।
- **पीने का पानी:** जल जीवन मिशन के तहत 12.2 करोड़ परिवारों को नल कनेक्शन प्रदान किए गए हैं।

SDGs का स्थानीयकरण

- **मिशन अंत्योदय** के अधीन **ग्राम पंचायत विकास योजनाओं** और '**आकांक्षी जिलों का परिवर्तन कार्यक्रम** (TADP)[15]' के माध्यम से ग्राम पंचायत (GP) स्तर पर SDGs के स्थानीयकरण का अनुसरण किया जा रहा है।
- **सामाजिक समावेशन और जेंडर:** स्थानीय स्तर पर जेंडर संबंधी मुद्दों को हल करने के लिए जेंडर संसाधन केंद्र (GRCs) और जेंडर प्वाइंट पर्सन्स (GPPs) पहलें शुरू की गई हैं।

ग्रामीण आय में वृद्धि

- **दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY NRLM)**
  - **क्षमता निर्माण:** 10.05 करोड़ ग्रामीण गरीब परिवारों को 90.90 लाख स्वयं-सहायता समूहों (SHGs) में संगठित किया गया।
  - **वित्तीय समावेशन:** 1.37 लाख SHGs महिला बैंकिंग सदस्यों को कॉरेस्पॉन्डेंट सखी के रूप में तैनात किया गया, स्वयं सहायता समूहों को 49,284 करोड़ रुपये की पूंजी सहायता प्रदान की गई।
  - **कृषि आजीविका:** 2.64 करोड़ से अधिक परिवारों के पास कृषि-पोषक उद्यान हैं, 4.30 करोड़ महिला किसानों को कवर किया गया।
  - **गैर-कृषि आजीविका:** स्टार्टअप विलेज एंटरप्रेन्योरशिप प्रोग्राम (SVEP): 31 राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों के 280 ब्लॉकों में लगभग 3.13 लाख उद्यम।
- **महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना:**
  - **99.98% भुगतान राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक फंड प्रबंधन प्रणाली (NEFMS)** के माध्यम से किए जाते हैं। मजदूरी DBT के तहत, आधार-आधारित भुगतान के माध्यम से हस्तांतरित की जाती है।

[15] Transformation of Aspirational Districts Programme

- स्थिर **ग्रामीण संपत्ति निर्माण कार्यक्रम** के रूप में विकसित हुआ, जो सतत आजीविका विविधीकरण के लिए है।
- विभिन्न पहलों के साथ मिलकर कार्य किया, जिसमें NRLM के साथ न्यूट्री गार्डन, पशुपालन और डेयरी विभाग (DAHD) के साथ चारा फार्म आदि शामिल हैं।

भावी परिदृश्य

- **स्वास्थ्य, शिक्षा और ग्रामीण विकास** भारत में संवृद्धि प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसके लिए 'सभी के लिए कल्याण' दृष्टिकोण बहुत महत्वपूर्ण रहा है।
- **वितरण तंत्र और लर्निंग आउटकम्स** पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। इसके साथ ही पारदर्शिता और डिस्क्लोजर द्वारा समर्थित विश्वास आधारित विनियमन और बाजारों को बढ़ावा देने की भी आवश्यकता है।

एक-पंक्ति में सारांश

भारत के सामाजिक क्षेत्रक सुधार शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और ग्रामीण विकास पर केंद्रित हैं, लेकिन गुणवत्ता, पहुँच और वित्तीय स्थिरता अभी भी प्रमुख चुनौतियां बनी हुई है।

UPSC के लिए प्रासंगिकता

- *शिक्षा सुधार और NEP 2020 (GS-2: शासन, शिक्षा नीति)*
- *स्वास्थ्य देखभाल अवसंरचना और सार्वजनिक स्वास्थ्य (GS-2: सामाजिक न्याय, स्वास्थ्य देखभाल नीति)*
- *ग्रामीण विकास और रोजगार योजनाएं (GS-3: अर्थव्यवस्था, GS-2: गवर्नेंस)*
- *महिला और बाल विकास नीतियाँ (GS-2: सामाजिक मुद्दे, कल्याण कार्यक्रम)*

अध्याय 12: रोजगार और कौशल विकास: अस्तित्वगत प्राथमिकताएं (Employment and Skill development: Existential priorities)

परिचय

- **भारत की 26 प्रतिशत आबादी 10-24 वर्ष के आयु वर्ग की है।** भारत को इस जनसांख्यिकीय लाभांश का उपयोग करने का सुनहरा अवसर प्राप्त है।
- भारत, 2030 तक **तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था** बनने की ओर अग्रसर है। **अमेरिका और चीन विश्व की दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएं** हैं।

रोजगार की स्थिति

- **बेरोजगारी दर 2017-18 की 6 प्रतिशत** से लगातार घटकर **2023-24 में 3.2 प्रतिशत** हो गई है।
- **श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) 49.3 प्रतिशत से बढ़कर 50.4 प्रतिशत** हो गई है, इसी अवधि (वित्त वर्ष 24 की दूसरी तिमाही से वित्त वर्ष 25 की दूसरी तिमाही) के दौरान **श्रमिक- जनसंख्या- अनुपात (WPR) 46 प्रतिशत से बढ़कर 47.2 प्रतिशत** हो गया है।
- कार्यबल में **स्व-नियोजित श्रमिकों** का अनुपात **2017-18 के 52.2 प्रतिशत** से बढ़कर **2023-24 में 58.4 प्रतिशत** हो गया है।

कार्यबल का क्षेत्रकवार वितरण

- PLFS 2023-24 के अनुसार, **कृषि क्षेत्रक रोजगार देने में अग्रणी** बना हुआ है। कृषि क्षेत्रक में 2017-18 में देश का 44.1 प्रतिशत कार्यबल नियोजित था, जो बढ़कर 2023-24 में 46.1 प्रतिशत हो गया।
- **विनिर्माण क्षेत्रक में कार्यबल** 12.1 प्रतिशत **से घटकर** 11.4 प्रतिशत और सेवा क्षेत्रक में कार्यबल 31.1 प्रतिशत से घटकर 29.7 प्रतिशत हो गया।

महिला श्रम बल सहभागिता दर (LFPR) में रुझान

- महिला LFPR **2017-18 के 23.3% से बढ़कर 2023-24 में 41.7%** हो गई है।
- **अधिकतर राज्यों (21)** में FLFPR **30-40 प्रतिशत** की सीमा में है।
- 2023-24 में सात राज्यों/ केंद्रशासित प्रदेशों ने FLFPR 40 प्रतिशत से अधिक रिपोर्ट की गई, जिसमें **सिक्किम में अधिकतम** 56.9 प्रतिशत दर दर्ज की गई।

मजदूरी और आय में रुझान

- नियमित वेतन/ वेतनभोगी श्रमिकों और स्व-रोजगार श्रमिकों की **औसत मासिक आय** 2018-19 से 2023-24 की अवधि के दौरान **5 प्रतिशत की CAGR** से बढ़ी।
    - इसी अवधि के दौरान अनियत श्रमिकों (कैजुअल वर्कर्स) की दैनिक मजदूरी 9 प्रतिशत की CAGR से बढ़ी।
- **ग्रामीण मजदूरी:** औसतन, कृषि में नकदी मजदूरी दर में पुरुषों के मामले में 5.7 प्रतिशत और महिलाओं के मामलों में 7 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

- मुद्रास्फीति के लिए समायोजित किए जाने पर, कृषि में वास्तविक मजदूरी दर में मामूली वृद्धि देखी गई, जिसमें पुरुषों के लिए 0.6 प्रतिशत और महिलाओं के लिए 1.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

- वित्त वर्ष 24 में **कॉर्पोरेट लाभप्रदता** 15 साल के शिखर पर पहुंच गई। वित्त वर्ष 24 में लाभ 22.3 प्रतिशत बढ़ा, लेकिन रोजगार में मात्र 1.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

भारत में औपचारिक क्षेत्रक का विकास

- **EPFO सब्सक्रिप्शन में निवल वृद्धि** दोगुनी से अधिक हो गई है, जो वित्त वर्ष 19 में 61 लाख से बढ़कर वित्त वर्ष 24 में 131 लाख हो गई है।

असंगठित श्रमिकों का कल्याण

- असंगठित श्रमिकों के पंजीकरण और समर्थन के लिए **ई-श्रम (e-Shram) पोर्टल** शुरू किया गया।
- **ई-श्रम (e-Shram) – "वन-स्टॉप-सॉल्यूशन"** लॉन्च किया गया, जिसमें विभिन्न सामाजिक सुरक्षा/ कल्याण योजनाओं का एक ही पोर्टल पर एकीकरण किया गया है।

रोजगार सृजन: रोजगार के अवसरों को बढ़ाने की दिशा में कदम

सुरक्षा बनाम लचीलापनः रोजगार सृजन में विनियमन की भूमिका

- रोजगार सृजन में सहायता के लिए मौजूदा केंद्रीय कानूनों का सरलीकरण किया गया है। इसके लिए चार श्रम संहिताएं तैयार की गई हैं; मजदूरी संहिता, 2019; सामाजिक सुरक्षा संहिता, 2020; औद्योगिक संबंध संहिता, 2020; और व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और कार्य दशाएं संहिता, 2020।

डिजिटल अर्थव्यवस्था के माध्यम से रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देना

- भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था **2025 तक एक ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर को पार करने का** अनुमान है।
- **2029-30 तक गिग कार्यबल के 23.5 मिलियन** तक पहुंचने का अनुमान है, जो गैर-कृषि कार्यबल का **6.7 प्रतिशत** और कुल आजीविका का 4.1 प्रतिशत होगा।

हरित कार्यबल (ग्रीन वर्कफोर्स) का निर्माण: अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में रोजगार सृजन

- भारत में अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में **कुल नौकरियों की संख्या 2023 में लगभग 1.02 मिलियन** तक पहुँच गई, जिसमें हाइड्रोपावर सबसे बड़ा नियोक्ता रहा (IRENA की रिपोर्ट)।
- महिलाओं के **स्वयं सहायता समूह (SHGs)** रोजगार सृजन को बढ़ावा देंगे, जिसमें सौर उद्यमिता (सोलर एंटरप्रेन्योरशिप) भी शामिल है।
- **जलवायु-स्मार्ट समाधान,** जो **विकेंद्रीकृत अक्षय ऊर्जा (DRE) का उपयोग** करते हैं, वे रोजगार सृजन में सहायक होंगे।
- **महिलाओं के रोजगार में चुनौतियां:** जलवायु परिवर्तन, आपदाएं, जेंडर पक्षपाती टूल्स, कम वित्तीय सहायता, सामाजिक-सांस्कृतिक और भौगोलिक बाधाएं।

कौशल विकासः बदलती दुनिया के लिए नव कौशल (न्यू-स्किलिंग), कौशल को पुनः प्राप्त करना (री-स्किलिंग) और कौशल बढ़ाना (अप-स्किलिंग)

- **PLFS रिपोर्ट 2023-24** के अनुसार, 15-29 वर्ष की आयु वर्ग के **4.9 प्रतिशत** युवाओं ने औपचारिक व्यावसायिक तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त किया है, जबकि अन्य **21.2 प्रतिशत** ने अनौपचारिक स्रोतों से प्रशिक्षण प्राप्त किया है।
- आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) डेटा दर्शाता है कि **90.2 प्रतिशत कार्यबल की शिक्षा माध्यमिक स्तर के समकक्ष या उससे कम है।**
  - **88.2 प्रतिशत** कार्यबल निम्न दक्षता वाले कार्यों में संलग्न है, जिनमें **प्राथमिक और अर्ध-कुशल व्यावसायिक कौशल शामिल हैं।**

बदलती दुनिया की मांग के अनुरूप कौशल विकास

- **री-स्किलिंग और अपस्किलिंग**: औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (ITIs) में **क्राफ्ट्समैन प्रशिक्षण योजना (CTS)** के तहत 1.24 करोड़ से अधिक नामांकित हैं; प्रधान मंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY) के तहत 1.57 करोड़ प्रशिक्षित, 1.21 करोड़ प्रमाणित (लघु अवधि प्रशिक्षण-STT), विशेष परियोजनाएँ (SP), और रिकग्निशन ऑफ प्रायर लर्निंग (RPL)।

- **महिला सहभागिता**: PMKVY के तहत वित्तीय वर्ष 2025 में महिलाओं की भागीदारी 58 प्रतिशत रही।
- **नवाचार और भविष्य के कौशल**: राष्ट्रीय व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण परिषद (NCVET) द्वारा 200 से अधिक नवाचार और भविष्य के कौशल पाठ्यक्रम (न्यू एज & फ्यूचर स्किल कोर्सेज) स्वीकृत किए गए; आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) कौशल के साथ **स्तरीय कौशल रूपरेखा** (मूलभूत, मध्यम और उन्नत स्तर) तैयार की गई।
- **उद्योग साझेदारी**: **ITI उन्नयन योजना (2024)** के तहत 1,000 ITIs को *हब-एंड-स्पोक* मॉडल में अपग्रेड किया जाएगा, साथ ही **PM इंटर्नशिप योजना** भी लागू होगी।
- **डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर फॉर स्किलिंग**: **स्किल इंडिया डिजिटल हब पोर्टल**, उद्योग-संगत पाठ्यक्रमों की आसान पहुंच के साथ सभी को कौशल प्रदान करने की दिशा में पहल।

निष्कर्ष

नियम अनुपालन को सरल बनाकर, श्रम को रोजगार अनुकूल बनाकर, और श्रमिक कल्याण को बढ़ावा देकर, श्रम सुधारों ने अनुकूल वातावरण तैयार किया है जो व्यवसाय करने में सुगमता और श्रमिक अधिकारों की सुरक्षा के बीच संतुलन बनाता है। साथ में, ये उपाय 'रोजगार सृजन के वर्चुअस चक्र' को बढ़ावा देते हैं, जो सतत रोजगार वृद्धि और आर्थिक समावेशिता का समर्थन करते हैं।

एक-पंक्ति में सारांश

भारत की रोजगार और कौशल विकास रणनीतियाँ औपचारीकरण, डिजिटल स्किलिंग और कार्यबल सहभागिता पर केंद्रित है, लेकिन जनसंख्या वृद्धि के अनुरूप रोजगार सृजन की गति तेज करनी होगी।

UPSC के लिए प्रासंगिकता

- *रोजगार और कौशल विकास (GS-3: अर्थव्यवस्था, श्रम बाजार नीतियां)*
- *महिला कार्यबल सहभागिता और लैंगिक समानता (GS-1 & GS-2: सामाजिक न्याय)*
- *गिग अर्थव्यवस्था और भविष्य का कार्यक्षेत्र (GS-3: आर्थिक सुधार और नवाचार)*

अध्याय 13: कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: AI) युग में श्रम व्यवस्था: संकट या उत्प्रेरक? (Labour in the AI era: Crisis or Catalyst?)

परिचय

- पिछले चार वर्षों में **श्रम बाजारों** में हुए विकास के कारण **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) इस क्षेत्रक** में व्यापक बदलाव ला देगा।
- यह आर्थिक विस्थापन AI द्वारा **सामाजिक और आर्थिक विभाजन को बढ़ाने** के डर को और पुख्ता करता है।

AI परिदृश्य

- 2021 और 2023 के बीच, सभी प्रकार के **AI में वैश्विक कॉर्पोरेट निवेश कुल 761 बिलियन अमेरिकी डॉलर** था।
- अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन का अनुमान है कि **AI जनित ऑटोमेशन के कारण वैश्विक स्तर पर लगभग 75 मिलियन नौकरियां खतरे** में हैं।
- NASSCOM का अनुमान है कि **भारतीय AI बाजार 2027 तक 25 से 35% CAGR** की दर से बढ़ेगा।

मानव केंद्रित ऑटोमेशन का भविष्य

- AI को अपनाना वास्तव में **श्रम बाहुल्य भारत के लिए अवसर और चुनौतियां,** दोनों प्रस्तुत करती है।
- पिछली प्रौद्योगिकी क्रांतियाँ कई वजहों से बेहतर नहीं रही हैं। इन्हें सावधानी से प्रबंधित नहीं करने के कारण इनसे व्यापक आर्थिक कठिनाइयां पैदा हुईं, विस्थापित लोगों को लंबे समय तक बेरोजगार रहना पड़ा और आय असमानता बढ़ी।
- भारत के श्रम बाजारों में जोखिमों को कम करने के लिए सक्षम, आस्वस्त और प्रबंधन संस्थानों की आवश्यकता है।
- ऐसे भविष्य के रोजगार के लिए **सरकार, निजी क्षेत्रक और शिक्षा जगत** के बीच समन्वित प्रयास आवश्यक हैं, जहां AI **"श्रम प्रतिस्थापन"** के बजाय **"श्रम को अधिक कुशल"** बना रहा हो।
- रोजगार का भविष्य **'ऑगमेंटेड इंटेलिजेंस'** के इर्द-गिर्द घूमता है, जहां कार्यबल मानव और मशीन, दोनों क्षमताओं को एकीकृत करता है।

© Vision IAS

निष्कर्ष

- नीति निर्माताओं को नवाचार को सामाजिक लागतों के साथ संतुलित करना चाहिए, क्योंकि श्रम बाजार में AI संचालित बदलावों का स्थायी प्रभाव हो सकता है। इसी तरह, कॉर्पोरेट क्षेत्र को भारत की जरूरतों के प्रति संवेदनशीलता के साथ AI की शुरुआत को संभालते हुए जिम्मेदारी से कार्य करना होगा।

एक-पंक्ति में सारांश

AI और ऑटोमेशन भारत के श्रम बाजार को नया आकार दे रहे हैं तथा जोखिम और अवसर, दोनों पेश कर रहे हैं, जिसके लिए नीति-संचालित कार्यबल पुनः कौशल, रोजगार सृजन रणनीतियों और AI-केंद्रित श्रम सुधारों की आवश्यकता है।

UPSC के लिए प्रासंगिकता

- *अर्थव्यवस्था पर AI और ऑटोमेशन का प्रभाव (GS-3: डिजिटल अर्थव्यवस्था और भविष्य की प्रौद्योगिकियां)*
- *श्रम बाजार नीतियां और कार्य का भविष्य (GS-3: आर्थिक सुधार और नवाचार)*
- *रोजगार संरक्षण और गिग अर्थव्यवस्था (GS-3: सामाजिक न्याय और श्रम कानून)*
- *ई-गवर्नेंस और गवर्नेंस में AI (GS-2: गवर्नेंस और डिजिटल परिवर्तन)*

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

Heartiest

Congratulations

to all Successful Candidates

79 in **TOP 100** Selections in **CSE 2023** from various programs of **Vision IAS**

Aditya Srivastava

Animesh Pradhan

Ruhani

Srishti Dabas

Anmol Rathore

Nausheen

Aishwaryam Prajapati

हिंदी माध्यम में 35+ चयन CSE 2023 में

हिंदी माध्यम टॉपर

मोहन लाल

अर्पित कुमार

विपिन दुबे

मनीषा धार्वे

मयंक दुबे

देवेश पाराशर

UPSC TOPPERS/OPEN SESSION: QR स्कैन करें

मोहन लाल

TOPPERS' TALK

UPSC CSE 2026 सामान्य अध्ययन

UPSC Prelims 2025 10 years PYQ

Master Classes Series करेंट अफेयर्स

DELHI

HEAD OFFICE
Apsara Arcade, 1/8-B 1st Floor, Near Gate-6 Karol Bagh Metro Station

MUKHERJEE NAGAR CENTER
Plot No. 857, Ground Floor, Mukherjee Nagar, Opposite Punjab & Sindh Bank, Mukherjee Nagar

GTB NAGAR CENTER
Classroom & Enquiry Office, above Gate No. 2, GTB Nagar Metro Building, Delhi - 110009

FOR DETAILED ENQUIRY
Please Call: +91 8468022022, +91 9019066066

enquiry@visionias.in | /@visioniashindi | /visionias.upsc | /vision_ias_hindi/ | /hindi_visionias

अहमदाबाद | बेंगलूरु | भोपाल | चंडीगढ़ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची